SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 07
December - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

दिसंबर-2025

रु.20/-

तिरुमल में वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में स्वर्ण रथ

30-12-2025

दि.04-12-2025 को
तिरुमल
श्री बालाजी के मंदिर में
कृत्तिका दीपोत्सव को
आयोजित करते हैं।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३३)

किंतु यदि तू इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो स्वधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा।

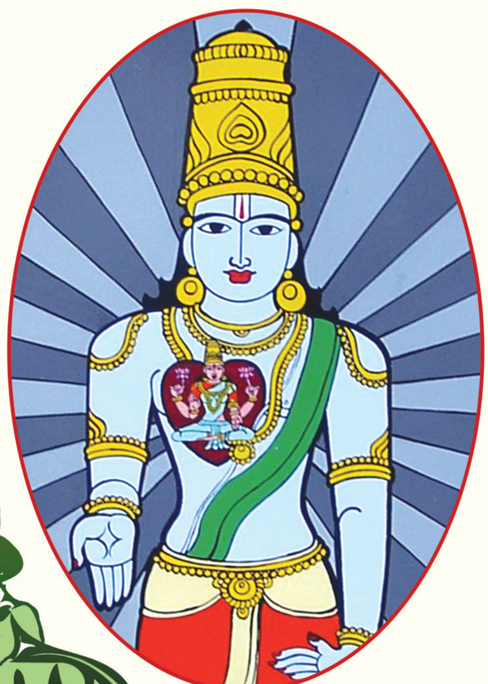

विश्वरूपमिदिवो विष्णुरूपमिदिवो
शाश्वतुलमैतिमिंक जयमु ना जन्ममु ॥ विश्व ॥

कोंडवंटि हरिरूपु गुरुतैन तिरुमल
पंडिन वृक्षमुले कल्पतरुवुलु
निंडिन मृगादुलेल्ल नित्यमुक्त जनमुलु
मेंडुग प्रत्यक्षमाये मेलुवो ना जन्ममु ॥ विश्व ॥

मेडवंटि हरिरूपु मिंचैन पैडि गोपुर
माडनेवालिन पक्षुलमरुलु
वाडल कोनेटि चुट्ल वैकुंठनगरमु
ईड माकु पोडसूपे इहमेपो परमु ॥ विश्व ॥

कोटि मदनुलवंटि गुडिलो चक्कनि मूर्ति
ईटुलेनि श्रीवेंकटेशुडितडु
वाटपु सोम्मुलु मुद्र वक्षपुटलमेल्मंग
कूटुवैनन्नेलिति एक्कुव वो ना तपमु ॥ विश्व ॥

तिरुमल शिखरों और वैकुंठ की समानता का आविष्कार किया गया है। श्रीहरि के बृहदाकार का प्रतीक है - तिरुमल गिरि। फलों के भार से विनम्र, वहाँ के वृक्ष ही कल्पतरु हैं। वहाँ के वनों में वास कर रहे जीव-जंतु भी नित्य-मुक्त मनुज हैं। इन सबों को देख पाना मेरा सौभाग्य है। विशाल भवन सा हरि का आकार मंदिर का शिखर है तथा कहीं दूर से उड आकर खिखर पर आसीन विहंग अमरकोटि है। पुष्करिणी के चारों तरफ फैला हुआ नगर, वैकुंठ सा दृश्यमान होने से ऐसा लग रहा है कि इस धरा पर ही 'परतत्व' सा बस गया है। कोटि मदनाकार श्रीहरि ही मंदिर में प्रतिष्ठित श्री वेंकटेश हैं। वक्षःस्थल में अलमेल्मंगा समेत विविध अमूल्य आभरणों से अलंकृत स्वामी के दर्शन से मेरी तपस्या का फल मुझे मिल गया है।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 दिसंबर-2025 अंक-07

विषयसूची

वैकुंठ एकादशी	श्री के.रामनाथन	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
जीवन का एक मात्र आदर्श श्रीमद्भगवद्गीता	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	17
तीर्थ मुक्कोटि	डॉ.बी.ए.वी.वर्मा	20
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	22
धनुर्मास माहात्म्य	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	25
अनंताल्वान से रचित 'श्री गोदा चतुःश्लोकी'	श्री के.रामनाथन	28
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	31
कर्नाटक के हरिदास साहित्य में हनुमान	डॉ.मैथिली प्र.राव	34
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	39
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	43
मुक्कोटि एकादशी	डॉ.जी.मोहन नायुडु	44
दिसंबर महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - उचित उपहार	श्रीमती प्रेमा रामनाथन	48
चित्रकथा - भगवान से उपदेश प्राप्त तिरुमंगै आल्वार (परकाल स्वामी)	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 41		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में स्वर्ण रथ, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री गोदादेवी का उत्सवमूर्ति, श्री गोविंदराजस्वामी मंदिर, तिरुपति।

गौरव संपादक
श्री अनिल कुमार सिंघाल, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

महीनों में सर्वश्रेष्ठ मार्गशीर्ष

भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिए अपने भगवद्गीता के उपदेश में कहा था कि वह इस ब्रह्मांड की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में स्वयं विराजमान हैं। इसी क्रम में, श्रीकृष्ण परमात्मा ने कहा है कि ''महीनों में मैं मार्गशीर्ष महीना हूँ।'' इससे हमें मार्गशीर्ष महीने की महत्ता समझ में आती है। तिरुमल में, जहाँ वर्ष भर भोर में सुप्रभातम और तिरुप्पावै दोनों सुने जाते हैं, वहीं इस मार्गशीर्ष महीने में भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी केवल तिरुप्पावै ही सुनते हैं, जिससे इस महीने का विशेष महत्व ज्ञात होता है। उसी प्रकार मानवों का एक वर्ष देवताओं के लिए एक दिन के बराबर माना जाता है। श्रीकृष्ण परमात्मा द्वारा गौरव के साथ उल्लेखित पवित्र मार्गशीर्ष महीना, देवताओं की गणना में ब्रह्म मुहूर्त के रूप में गिना जाता है। यही कारण है कि हमारी इस आध्यात्मिक भूमि माने जाते भारत देश में मार्गशीर्ष महीने के दौरान विवाह जैसे सांसारिक संबंधों से जुड़े उत्सव नहीं मनाये जाते हैं और श्री वैकुंठ एकादशी, आरुद्र दर्शन सहित आध्यात्मिक आयोजनों को ही महत्व दिया जाता है।

जहाँ दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोग ठंड के मौसम में अपने घरों में दुबके रहते हैं, वहीं हमारे भारत देश के भक्तगण कड़ाके की ठंड की परवाह किए बिना सुबह तड़के स्नान करते हैं, जिससे उनका शरीर और मन दोनों पवित्र हो जाते हैं। वे भक्तिपूर्वक अपने घरों में पूजा करते हैं और आस-पास के मंदिरों में जाकर पूजा-अर्चना करना अपनी आदत बना लेते हैं।

श्रीकृष्ण से विवाह करने की इच्छा रखने वाली श्री आंडाल (गोदा) ने कात्यायनी व्रत का अनुसरण किया और अपनी सखियों के साथ भगवान श्रीकृष्ण के महल में जाकर उस व्रत के लिए आवश्यक ''परै'' (ढोल) सहित अन्य चीज़ें प्राप्त कीं। इसका विवरण उन्होंने 30 पदों वाले तिरुप्पावै नामक ग्रंथ में दिया है। इस मार्गशीर्ष महीने में, श्री रामानुज के सिद्धांतों का पालन करने वाले सभी वैष्णव मंदिरों में प्रतिदिन तिरुप्पावै के पदों का पाठ किया जाता है, साथ ही उन पदों की व्याख्या करते हुए कथा प्रवचन भी आयोजित किए जाते हैं। इसी प्रकार, शैव मंदिरों में संत माणिक्कवासगर द्वारा रचित तिरुवेम्पावै के पदों का गान किया जाता है। इसके अलावा, इस मार्गशीर्ष महीने की शुक्ल पक्ष की एकादशी यानी वैकुंठ एकादशी से पहले के 10 दिनों में और बाद के 10 दिनों में दिव्य प्रबन्धम के पद का पूरी तरह से पाठ किया जाता है। इन उत्सवों को पगल् पत्तु (दिन के दस) और रा पत्तु (रात के दस) के रूप में जाना जाता है। श्रीरंगनाथ द्वारा तिरुमंगै आल्वार को दिए गए वरदान के कारण, मधुर तमिल पदों वाले आल्वारों के दिव्य प्रबन्धम को संस्कृत में रचित वेदों के समान दर्जा प्राप्त हुआ। शहद से भी मधुर दिव्य प्रबन्धम पदों की महिमा को दर्शाने वाले ये पगल् पत्तु और रा पत्तु श्री रामानुज दर्शन को गौरवान्वित करते हैं और मार्गशीर्ष महीने की पवित्रता को और अधिक बढ़ाते हैं।

तिरुमल ही वह पवित्र दिव्य देश है जहाँ वर्ष के सभी दिनों में संस्कृत वेद पाठ और मधुर तमिल दिव्य प्रबन्धम का गान निरंतर गूँजता रहता है। इस वर्ष भी, हमेशा की तरह होने वाले पगल् पत्तु, रा पत्तु उत्सवों और वैकुंठ एकादशी उत्सव का, हम सभी अपनी सुविधानुसार समक्ष जाकर या श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल के माध्यम से दर्शन करें। साथ ही, जैसा कि श्री आंडाल ने कहा है, ''संगत तमिल मालै मुप्पादुम तप्पा में'' (तीस पदों की मधुर तमिल माला का त्रुटिहीन रूप से पाठकर), हम प्रतिदिन भक्ति और श्रद्धा के साथ तिरुप्पावै के पदों का पाठ करें और श्री अलर्मेल्मंगै समेत श्री श्रीनिवास वेंकटेश्वर की कृपा प्राप्त कर प्रसन्न होवें।

वैकुंठ एकादशी

- श्री के.रामनाथन

एकादशी का दिन

हिंदू धर्म की वैष्णव परंपरा में श्री वैकुंठ एकादशी अत्यधिक बहुत महत्वपूर्ण त्योहार है। पुराणों के अनुसार, मनुष्यों का एक वर्ष देवताओं का एक दिन होता है। मार्गशीर्ष मास देवताओं की भोर का, ब्रह्म मुहूर्त का समय होता है। ब्रह्म मुहूर्त में भगवान विष्णु अपनी योगनिद्रा से जागते हैं, इसलिए इस महीने में आने वाली एकादशी विशेष महत्व का पर्व माना जाता है।

आध्यात्मिक स्थिति

वैष्णव परंपरा कहती है कि एकादशी भगवान विष्णु को अत्यंत प्रिय है। एकादशी शब्द का अर्थ है ग्यारहवाँ दिन, फिर भी इसका आंतरिक दर्शन इसे मोक्ष के मार्ग की ओर ले जाता है। मानव शरीर 11 इंद्रियों से संचालित होता है। इनमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन रूपी एक इंद्रिय आदि शामिल हैं। इन ग्यारह इंद्रियों को सांसारिक मोह से हटाकर भगवान विष्णु के चरणों में समर्पित करके उनकी पूजा करना और वैकुंठ पद प्राप्त करना ही एकादशी व्रत का आधार है। वैकुंठ पद केवल स्वर्ग प्राप्त करना नहीं है, बल्कि जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर भगवान के साथ एक हो जाने और नित्य सेवा में लीन होने की एक उच्च आध्यात्मिक स्थिति है।

व्रत का फल

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को ही विशेष रूप से ''श्री वैकुंठ एकादशी'' कहा जाता है। यह पूरे वर्ष की 24 एकादशियों के बाद आने वाली 25वीं एकादशी है। माना जाता है कि इस दिन किया गया व्रत तीन करोड़ व्रतों को करने का फल देता है। मोक्ष प्रदान करने वाली इस एकादशी को मोक्ष दत्त एकादशी भी कहते हैं।

यद्यपि हर एकादशी का व्रत

पापों को धोकर मोक्ष देने में समक्ष है, वैकुंठ एकादशी के दिन व्रत करने से सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि जो अपने पूरे जीवन में ईश्वर भक्त और धर्मात्मा होते हैं, उन्हें एकादशी के दिन ही मृत्यु प्राप्त होती है और उन्हें पुनर्जन्म नहीं लेना पड़ता, वे देवताओं के समान स्थान प्राप्त करते हैं। इसीलिए यह कहावत प्रचलित हुई कि ''गायत्री से श्रेष्ठ कोई मंत्र नहीं, माँ से श्रेष्ठ कोई देवता नहीं, एकादशी से श्रेष्ठ कोई व्रत नहीं।''

एकादशी पर्व का उद्गम

श्री वैकुंठ एकादशी के उद्गम के बारे में कई कथाएँ हैं। उनमें से मधु-कैटभ की कथा बहुत प्रसिद्ध है। मधु और कैटभ नाम के दो असुर ब्रह्मा के अहंकार को तोड़ने के लिए प्रकट हुए। उन राक्षसों ने देवताओं और मुनियों को बहुत कष्ट पहुँचाया। देवताओं और मुनियों को उन राक्षसों से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने उनके साथ लगातार एक महीने तक भीषण युद्ध किया। युद्ध के अंत में राक्षसों का वध हुआ। तब उन्होंने भगवान विष्णु से वर माँगा। उनके वर के परिणामस्वरूप, मार्गशीर्ष मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को उन्हें वैकुंठ पद प्राप्त हुआ। उस दिन भगवान विष्णु ने विशेष रूप से उनके लिए वैकुंठ का द्वारा खोला और उन्हें मोक्ष प्रदान किया। भगवान विष्णु के चरणों में शरणागत उन राक्षसों ने उनसे प्रार्थना की कि जिस प्रकार उन्हें वैकुंठ द्वार खोलकर अनुग्रह किया गया, उसी प्रकार इस दिन भगवान के मंदिर में स्वर्ग द्वार (परमपद द्वार) से होकर उनकी पूजा करने वाले भक्तों पर भी वैकुंठ द्वार खोलकर अनुग्रह करें। भगवान विष्णु ने उनकी इच्छा पूरी की। राक्षसों की इच्छा के अनुसार, आज भी वैष्णव मंदिरों में स्वर्ग वासल (वैकुंठ द्वार) खोलने का उत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाता है।

व्रत के नियम

शरीर और मन से भगवान विष्णु के साथ एकाकार हो जाना ही व्रत शब्द का वास्तविक अर्थ है। इसलिए एकादशी व्रत को केवल एक शारीरिक कर्मकांड नहीं, बल्कि मन को नियंत्रित करने वाला एक आध्यात्मिक अभ्यास माना जाता है।

एकादशी व्रत केवल एक दिन का पूजा अनुष्ठान नहीं है। इसके बजाय, यह दशमी, एकादशी और द्वादशी - इन तीन दिनों को सम्मिलित करने वाली पूजा व्रत पद्धति है। व्रत के पहले दिन, दशमी को, दिन में केवल एक बार भोजन करना चाहिए। रात के भोजन से बचना चाहिए और केवल फल खाने चाहिए। एकादशी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करना चाहिए, भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए और व्रत करना चाहिए।

उस दिन पूरे दिन भोजन नहीं करना चाहिए। उस रात जागरण करके भगवान विष्णु के नामों का जाप करना चाहिए। द्वादशी के दिन निर्धारित समय पर व्रत का पारण (समापन) करना चाहिए।

पगल् पत्तु - रा पत्तु

अध्ययनोत्सव को एक उत्सव के रूप में मनाने का श्रेय तिरुमंगै आल्वार नामक वैष्णव संत को जाता है। यह उत्सव तमिल के भक्ति साहित्य, नालायिर दिव्यप्रबन्धम को केंद्र में रखकर मनाया जाता है। अध्ययनोत्सव के दौरान आल्वारों द्वारा रचित प्रबन्धम गीतों का गायन किया जाता है। यह उत्सव 'पगल् पत्तु' (दिन के दस दिन) और 'रा पत्तु' (रात के दस दिन) के नाम से मनाया जाता है। इनमें पगल् पत्तु एकादशी से पहले के दस दिनों को संदर्भित करता है। इस दौरान कुलशेखर आल्वार की पेरुमाल् तिरुमोलि और तिरुमंगै आल्वार की तिरुनेडुतांडकम, तिरुक्कुरून्तांडकम और पेरिय तिरुमोलि के गीत गाए जाते हैं। रा पत्तु में नम्माल्वार की तिरुवायमोलि के गीत गाए जाते हैं।

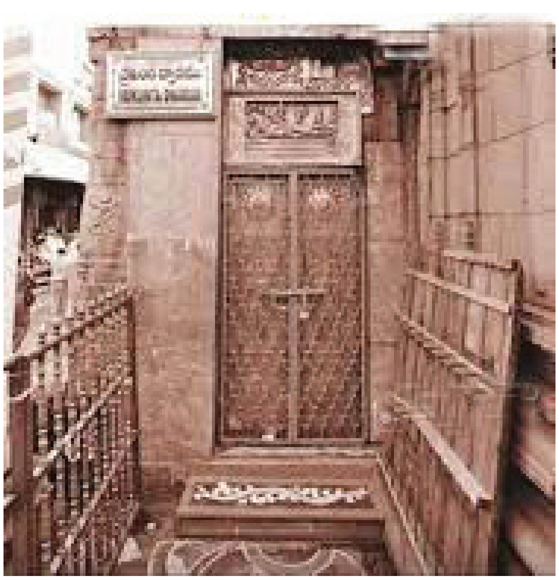

कलियुग वैकुंठ में एकादशी

तिरुमल तिरुपति में यह अध्ययनोत्सव 25 दिनों तक मनाया जाता है। इसमें 12 आल्वारों के नालायिर दिव्यप्रबन्धम के गीत गाए जाते हैं। इस उत्सव के 24वें दिन वराहस्वामी की पूजा और 25वें दिन उत्सव का समापन होता है।

वैकुंठ एकादशी के दिन स्वर्ग वासल का दर्शन मोक्ष प्रदान करने वाली घटना माना जाता है। उस दिन कलियुग वैकुंठ कहे जाने वाले तिरुमल तिरुपति में विशेष उत्सव आयोजित किया जाता है। इस उत्सव के उपलक्ष्य में, तिरुपति एलुमलैयान (वेंकटेश्वर) मंदिर में स्वर्ग वासल दर्शन होता है। इन उत्सव के दिनों में मंदिर को बिजली की रोशनी और विभिन्न रंगों के फूलों से सजाया जाता है एकादशी के दिन, मलयप्पस्वामी, लक्ष्मी देवी के साथ सोने के रथ पर दर्शन देते हैं। द्वादशी के दिन स्वामिपुष्करिणी में स्नान करने का चक्रस्नान अनुष्ठान होता है।

वैकुंठ एकादशी ग्यारह इंद्रियों को भगवान के साथ एकीकृत करने का एक आध्यात्मिक प्रयास है। यह बुराई की समाप्ति और पवित्र दिन के जन्म का प्रतीक त्योहार है।

वैष्णव संत पेयाल्वार का यह गीत भगवान विष्णु के दर्शन को हमारी आँखों के सामने प्रस्तुत करता है :

तिरुक्कंडेन पोन् मेनी कण्डेन् तिकळुम
अरुक्कन अणि निरमुम् कण्डेन् सेरुक्किळरुम
पोन्नाळि कण्डेन् पुरिसंगम् कैक् कण्डेन्
एन्नाळि वण्णन्पाल् इन्रु।।

इसका अर्थ है, मैंने श्रीहरि के दर्शन किए, उनका स्वर्णिम रूप देखा, दमकते सूर्य के समान सुंदर रंग देखा। मैंने चमकता हुआ सुदर्शन चक्र देखा, हाथ में शुभ शंख देखा। मेरे महासागर-रंग वाले भगवान के पास ये सब आज मैंने देखा।

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

आकाश राज श्रीनिवास के पास विवाह पत्र भेजना :

संतोष के साथ पद्मावती से इस रूप में कहते तदुपरांत आकाश राज ने अपने गुरु बृहस्पति का स्मरण किया। उन के आते देखकर उठ कर उन का स्वागत किया। उन्हें मणि के पाटे पर बिठाकर अर्घ्य पादादि विधियाँ पूरा करके नमस्कार करके बैठ गया। तब राजा ने वकुला मालिका के वेंकटाद्री से आकर बतानेवाले विवाह के शुभ वाक्यों को सविस्तार से उन्हें बताया। गुरु बृहस्पति ने यह सुन कर आनंदित होकर नृपति को देखकर इस रूप में कहा। ''आप के इस नगर के उत्तर भाग में पांच क्रोस दूरी पर जन हित के लिए ब्रह्मानुसंधान को जाननेवाले शुक योगी रहते हैं। उन्हें उचित रीति से यहाँ बुला लीजिए।'' यह सुन कर राजा ने अपने भाई को भेज कर शुक मुनि को बुलवा लिया। शुक मुनि के आने के बाद राजा ने अपने सिंहासन से उठकर उन्हें रत्नासन पर बिठा कर उन की पूजा की। तब शुक मुनि ने राजा को देखकर करुणा से उन्हें बैठने के लिए कहा। अमरों के गुरु बृहस्पति को देखकर संतोष के साथ शुक ने कहा।

''हे सुरवर गुरुवर! मुझे यहाँ पर बुलाने का कार्य शीघ्र ही मुझ से बताइए।'' कहते सुन कर गुरु ने आनंद के साथ इस रूप में कहा। ''सुनिए हे शुक योगींद्र! महान वेंकटेश्वर ने पद्मावती के साथ प्रेम किया। उस के साथ विवाह करने के लिए वकुला मालिका को भेजा है। वकुला मालिका विवाह की बात चलाने आयी है। उस के लिए नृपति ने मुझे बुलाया। इसलिए मैं आया हूँ। आप भी आये। अब भूसुर से क्या कहना है?'' कहनेवाले गुरु की ओर देखकर शुक ने कहा। इस राजा के पुण्य फल से ही पद्मावती प्राप्त हुई है। ऐसी सौभाग्यवती के लिए कोई मनुष्य उचित नहीं है। चक्री ही उचित वर है। कहते ''हे नृपालक! तुम ने महा तप करके इस कन्या को पृथ्वी पर देखा है। तुम्हें पुण्य फल की सिद्धि हुई है। अब इस पद्मावती का विवाह प्रेम के साथ हरि के साथ कीजिए।'' इस रूप में शुक योगी के कहने पर अत्यंत आनंदित होकर राजा ने कहा। ''आप और गुरु दोनों मिल कर शुभ लग्न को तैयार कीजिए। विवाह के तालमेल को

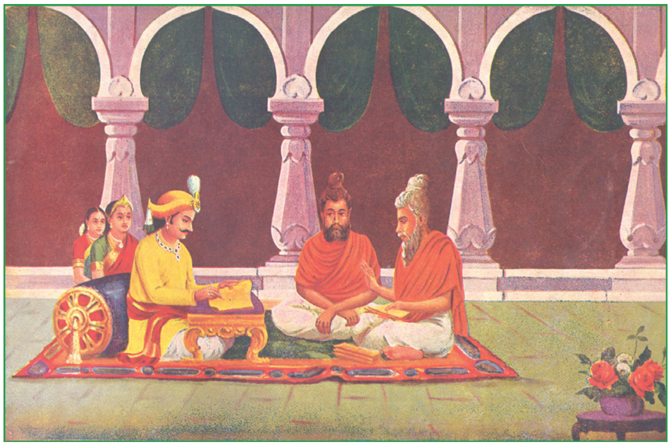

बिठाइए।'' कहते सुन कर तब गुरु और शुक मुनि दोनों ने तालमेल देखते हुए महोन्नत लग्न को देखने लगे।

तब नक्षत्रानुसार योनि कूट, नाडी कूट, सूत्र योग आदि दस प्रकार से तालमेल देखकर उन्होंने राजा को मना लिया। तब राजा ने सभा मध्य में हाथ ऊपर उठाकर ऐलान किया। ''श्रीनिवास के साथ पद्मावती का विवाह किया जायेगा।'' निश्चय के साथ इस रूप में कह कर बृहस्पति की ओर देखकर और इस रूप में कहा। 'हरि को नमस्कार कहते लिखाऊंगा' यह सुन कर बृहस्पति ने कहा। ''हे नृपति! वे स्वामी मनुष्य बन कर आप की कन्या से विवाह करने का निर्णय किया है। इसलिए पहले ही नमस्कार कहते नहीं लिखना है। आशीर्वाद देना ही उचित है। उस रूप में पत्रिका को तैयार करके भेजने के लिए कहा।'' यह सुन कर राजा ने अपने पुत्रादि सर्व कलत्र, बंधुजनों को हर्ष होते सभा स्थान में स्थित एक सोने के टीन पर शुभ लग्न में इस रूप में लिखवाया। ''श्री मद्खंड लक्ष्मी प्रसन्नेक्षणालंकृत सज्जन अखिलांड कोटि ब्रह्मांड नायक, सर्वज्ञ श्री स्वामी को आकाश राज आयु, आरोग्य, पुत्र, पौत्राभिवृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद देते हुए आज के दिन यहाँ सब कुशल मंगल हैं। आप के यहाँ के कुशल मंगल के बारे में लिख भेजिए। मेरे गुरु और व्यास सुत के कहने पर आप का विवाह मेरी पुत्री पद्मावती के साथ किया जायेगा। कृपया हे श्रीनिवास! इसे स्वीकार कर लीजिए।'' इस रूप में पत्रिका लिखवाकर हल्दी से लेपन करवाकर बृहस्पति के हाथों में दे दिया। तब गुरु ने उसे देखकर शुक योगींद्र के हाथों में दे कर मंदस्मित होकर ''इस पत्र को श्रीनिवास स्वामी को समर्पित कीजिए। प्रत्युत्तर लाने के लिए भी आप ही योग्य हैं।'' कहा। बृहस्पति की बातों को सुन कर शुक योगी परमानंद का अनुभव करते हुए उस पत्र को लेकर वेंकटाचल पहाड पर चढ गए। तब उस मुनि के आगमन की प्रतीक्षा करनेवाले श्रीनिवास उस मुनि की अगवानी करते हुए लिवा लाकर तिंत्रिणी वृक्ष के नीचे पहले से बने पुष्प-पीढे पर बिठाया। बाद में इस रूप में कहा।''

''हे योगीश्वर! सत्कृपा से आप का इधर आने से बहुत आनंद हुआ है। हे मायारहित! मेरा काम बना है या नहीं? कृपया बताइए!'' कहते सुन कर मंदस्मित होकर शुक योगी ने इस रूप में कहा। ''हे विश्वात्मक! आप के महा मन में निर्णीत कार्य कभी नहीं बनेगा? सदा सफल ही होगा।'' शुक योगी के इस रूप में बोलते सुन कर श्रीहरि को आनंद हुआ। उस मुनि को नमस्कार करके अपने कुछ समाचार सुनाने के बाद मुनि ने उत्साह से अपने साथ लाये उस महा शुभ पत्र को स्नेह से श्रीहरि को दिया।

तब हरि ने उस पत्र को पढकर समझ कर तुरंत तभी एक बडे केवडे के पत्ते पर अपने नख से सुंदर लिखा।

श्रीनिवास स्वामी का जवाब :

बादरायण सुत को अच्छी तरह सुनने के लिए कहते हुए श्रीहरि ने इस रूप में पढा। ''श्री पूर्ण राज पूजित धर्मतत्पर सुधर्म के पुत्र सम्राट राज श्री आकाश राज जी को शेषाद्री वल्लभ के नमस्कार। आज तक हम कुशल मंगल हैं। आप के कुशल मंगल के बारे में लिख भेजिए। वैशाख मास के शुक्ल दशमी शुक्रवार के

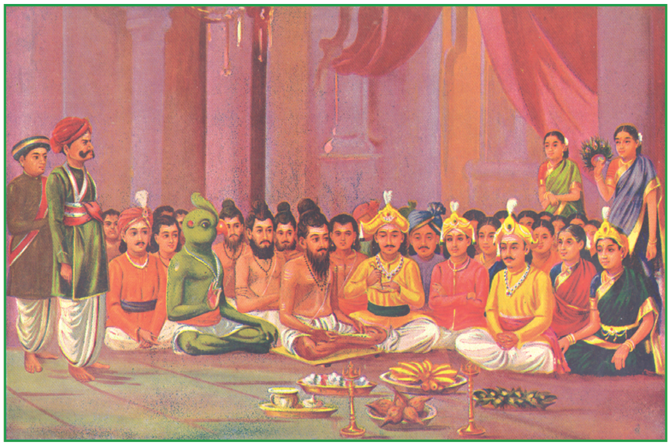

दिन रात को शुभ मुहूर्त को हम अपने बंधु-मित्रों के साथ मिल कर वहाँ पधारेंगे। आप को हमारे दस हजार प्रणाम।'' श्रीनिवास ने अपने द्वारा लिखे गए पत्र को अच्छी तरह पढकर उस पत्र को और एक पुष्प हार को मुनि के हाथों में दे दिया। फिर हँसते हुए मुनि के साथ आलिंगन करके श्रीहरि ने विनति करते हुए मुनि को बिदा किया। शुक योगी ने फिर पहाड से उतर कर नारायणवन पुर पहुँचकर आकाश राज को वह पत्र दे दिया। तब शुक ने राजा को और गुरु को श्रीहरि का शुभ समाचार दिया। अपनी महिमा से फिर अपने निजी आश्रम लौट गए। बृहस्पति भी अपने निजी स्थान को लौट गए। राजा ने विवाह महोत्सव के लिए नगर को तैयार करने के लिए सेवकों की नियुक्ति की। इधर धरणी देवी ने वकुला मालिका को दिव्याभरण उपहार देकर बिदा किया। तब वकुला मालिका ने शेषाद्री लौटकर श्रीनिवास को देखकर इस रूप में कहा।

वकुला मालिका के द्वारा वेंकटेश्वर को शुभ समाचार देना :

''हे मेरे पुत्र! वेंकट! नारायण पुर होकर आयी हूँ। सकल शुभ हैं। विवाह महोत्सव के लिए मुझे क्या क्या काम करना है यहाँ पर?'' कहने पर सुन कर हरि के ''हे जननी! इस विवाह की बात चलाकर आयी, अब धन मैं कहाँ से लाऊँ? इस का क्या उपाय है? मुझे बताओ अभी।'' कहने पर वकुला मालिका ने कहा। ''हे पुत्र! लक्ष्मी को यहाँ पर बुलाने से तुम को बहुत धन देगी।'' सुन कर माधव ने वकुला मालिका को देखकर कहा। ''हे माँ! सुनो। लक्ष्मी से अलग होकर यहाँ पर विवाह करूँगा कहने पर सिरि क्यों मुझे आवश्यक धन देगी?'' कहते सिर झुका कर हरि चिंता करने लगे। तब वकुला ने श्रीनिवास को देखकर ''उन से बहुत आडंबर से कह कर आयी हूँ। अब इस रूप में चिंता करने से मैं क्या करूँ? तुम को वराहस्वामी से एक बात बताकर उन के द्वारा कोई प्रयत्न करना चाहिए। हे नीरजाक्ष! तुम अब चुप रहकर विवाह के लिए उन का बुलावा आने पर बिना धन के विवाह के लिए कैसे निकलेंगे?'' महा भय से वकुला के इस रूप में कहने पर हँसकर चक्री ने मोद से कहा।

''हे माँ! अभी जाकर वराहस्वामी से धन के बारे में मांग कर आओ।'' विनोद के साथ हरि ने इस रूप में कह कर वकुला मालिका को वराहस्वामी के पास भेजा। वकुला ने वराहस्वामी के पास जाकर इस रूप में कहा। ''हे श्री वराहस्वामी! श्रीनिवास ने विवाह करने का निर्णय लिया है। किंतु उस के पास धन नहीं है। बिना धन के विवाह कैसे होगा? इस के लिए कोई उपाय बताओ। लडकी देनेवाले भाग्यवान हैं। उन के साथ स्तर को बनाये रखना है। वेंकटेश्वर ने सिर्फ उस

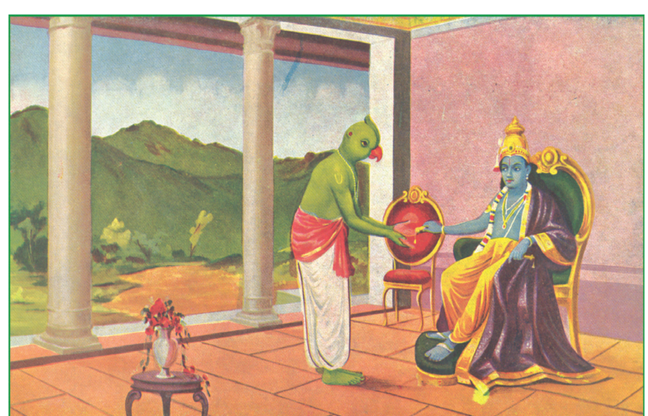

कन्या के गले में मंगलसूत्र डालने का निर्णय लिया है तो लोग हँसेंगे। तुम ही धन को जुटाने का कोई उपाय बताओ।'' इस रूप में कहने पर भू वराह स्वामी ने वकुला को देखकर कहा। ''हे वकुला! तुम निर्भय रहो। हमारे श्रीनिवास को धन देना कोई बडी बात नहीं है। मोद के साथ तुम सिर्फ इस विचित्र को देखते रहो। तुम्हारे बताने के पहले ही उस महा स्वामी के बारे में सब कुछ मैं जानता हूँ। वे आनंद के साथ सब कुछ देख रहे हैं। तुम को क्यों चिंता करनी है? शांत रहो। हरि के पास ही रहो। ब्रह्मादि यहाँ पर आकर विवाह को संपन्न करेंगे।'' ऐसा बताकर वराहस्वामी ने वकुला को बिदा किया। वुकला ने जाकर हरि से वराहस्वामी की बातों को सुनाया।

तब रमाकांत ने संतोष के साथ शांति से मन में गरुड़ का स्मरण किया। तब गरुड़ तुरंत वेंकटाद्री पर पहुँच गया। उसने चक्री को दंड प्रणाम किया। तब चक्री ने कुछ लिखकर उस के हाथ में देते हुए इस रूप में कहा। ''हे गरुड़! तुम जाकर ब्रह्म को यह पत्र देकर सकल बंधु समेत, सपरिवार समेत आकर मेरा विवाह करने के लिए कहो। अब जाओ।'' फिर शेष को बुलाकर ''तुम शिव को बुलाने जाओ। परिवार के साथ मेरे विवाह महोत्सव को देखने शीघ्र ही आने के लिए कहो शिव से।''

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्योहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए 3 महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

जीवन का एक मात्र आदर्श श्रीमद्भगवद्गीता

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया

हमारा जीवन एक बहती सरीता है। सबसे पहले बाल्यावस्था, यौवन, प्रौढ और अंत में वृद्धावस्था से हम गुजरते है। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक कई सारे तजुर्बे में से पास होते है। किसी से मिलना जुलना, किसीसे मुलाकात, घुमना, फीरना, वांचन और चेतन हमको पीढ बनाते है। समय-समय पर हमारा रस और विचार बदलते रहते हैं।

जीवन के प्रमुख चार आश्रम (स्वग्राही, परिवारग्राही, समाजग्राही और सर्वग्राही) के रास्ते पर चलते-चलते कई संबंध बनाते है। और जीवन में प्रगति करते है। इस जीवन के दौरान ममत्व, मोह, शोक, प्रेम जैसी घटना में हम डूबते रहते है।

महाभारत को पंचम वेद के नाम से भी जानते है। महाभारत की बात करे तो अर्जुन भी सगे संबंधी के मोह से विषाद में रहते थे। युद्ध के समय उसको चित्तभ्रम हो गया था। इस वक्त अर्जुन को कई सारे प्रश्न उठे, अर्जुन ने कई सारे प्रश्न का हल भी कृष्ण से मांगा। अर्जुन का विशाद दूर करने के लिये, मोह को दूर करने के लिये अर्जुन को श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, ये जो भी शब्द भगवान के मुख से निकला, ये पवित्र वाणी को हम ''श्रीमद्‌भगवद्‌गीता'' के नाम से जानते हैं।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का प्रादुर्भाव

महाभारत के युद्ध में कौरव पांडव आमने सामने योद्धा बनाकर खडे हो गये। आज भाई-भाई दुश्मन बन गये थे। कौरव भाईओं के सामने पांडवों की हक्क की लड़ाई थी। जब युद्ध के मैदान में अर्जुन ने दुश्मन योद्धाओं को देखा तो, काका, दादा, भाई, संगे संबंधी नजर आये तब वे विषाद में पड गये, मोह में पड गये, इसका अकेल अर्जुन ने सारथी भगवान श्रीकृष्ण के पास मांगा, तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने मुख से वाणी को प्रवाहित करके समझाया...

लगातार देढ-दो घंटे तक भगवान के मुख से वाणी का प्रवाह सतत शुरू रहा ये पवित्र दिवस या मार्गशिर शुद्ध एकादशी का दिन है।

हमारे शास्त्रकारों ने ऋषि-मुनियों ने ये पवित्र दिन को गीता जयंती के नाम से प्रसिद्ध किया।

पूरे विश्व में गीता जयंती के अवसर पर गीता का संपूर्ण अध्ययन होता है। सभी अध्याय का विश्लेषण भी होता है। आश्रमों और संस्कृत पाठशाला में, विद्यार्थी अध्ययन करते है। गीता जयंती के अवसर पर मंदिर, आश्रम, संस्कृत पाठशाला, उपासक, सभी लोग भगवान श्रीकृष्ण की ये पवित्र वाणी को अध्ययन के रूप में प्रवाहित करते है। इस घटना से पूरे विश्व में नकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। विज्ञान कहते है कि, हम कुछ भी बोले उसका नाश नही होता... इस सिद्धांत पर आज विज्ञान, भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र वाणी की खोज करने में लगी हुई है। काश... हमको वाणी मिल जाय...।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता क्या है?

अर्जुन को विषाद हुआ, मोह हुआ उसका हल भगवान श्रीकृष्ण ने बताया वही गीता है। ये हल, ये संदेश सिर्फ अर्जुन के लिये ही था?

अर्जुन तो एक माध्यम था। अर्जुन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण ने सारे विश्व को मानव की तरह जीने का मार्गदर्शन दिया। गीताजी सारे संसार के प्राणियों की पथदर्शक है। हमारी हर समस्या का हल उस में है। जिस तरह माँ अपने बच्चे को नित्य सहि रास्ता दिखाती है। उसी तरह गीताजी भी संसार के सभी प्राणियों को सही रास्ता दिखाती है। इसलिये गीताजी हमारी माँ समान हुई। गीताजी को हम शत् शत् वंदन करते है।

हिन्दु धर्म के महान ग्रंथ-वेद-उपनिषद और विविध शास्त्रों के विशेष ज्ञान-विज्ञान की सरल समाज हमे गीताजी में से मिलती है। हमारी जीवन यात्रा में विषाद, शोक, मोह सब रहता है। ये विषाद, शोक, मोह से शुरू होकर ज्ञान, कर्म, ध्यान, भक्ति और बाद में समर्पण अंत में संन्यास तक ले जाने का रास्ता हमे गीताजी बताते है। धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष का रास्ता भी गीताजी से ही मिलता है।

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का संक्षिप्त परिचय

''श्रीमद्‌भगवद्‌गीता'' में कुल अठारह अध्याय है। भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच का संवाद है। जो सभी अध्याय का कुल मिला के सात सौ एक (701) श्लोक में लिपिबद्ध हुआ है। गीताजी साक्षात भगवान श्रीकृष्ण की वांग्मय मूर्ति है। सबसे पहले ध्यानमंत्र और वंदन स्तुति करनी चाहिए। इसके बाद अठारह अध्याय का अध्ययन और अंत में गीता माहात्म्यम् का अनुसंधान करना ही चाहिए।

पूरे विश्व में सभी लोग गीताजी का सम्मान करते है। न्यायालय में भी गीताजी के ऊपर हाथ रखकर कसम पाई जाती है। सभी धर्म से गीताजी को सम्मान मिला है। संसार के कई महानुभावों ने गीताजी के बारे में अपना विचार प्रकट किया है। आये हम देखेंगे...

गीताजी के बारे में महानुभावों का विचार

1) भगवान श्रीकृष्ण कहते है...

''गीता मेरा हृदय है, गीता मेरा उत्तम सार है, गीता मेरा उग्र और अविनाशी ज्ञान है, मेरा परम रहस्य है, और मेरा श्रेष्ठ निवास स्थान है, गीता मेरा परमपद है, मेरा परम रहस्य है, और मेरा श्रेष्ठ गुरु भी है।''

2) महर्षि व्यास के शब्दों में...

''गीताजी साक्षात श्रीहरि विष्णु के मुख कमलों से अवतरित हुई है। ये गीता नित्य हमारे मुख में और दिल में रहनी चाहिए। गीताजी के अलावा दूसरे शास्त्रों का हमारे जीवन में क्या प्रयोजन?''

3) श्रीमद् जगद्गुरु शंकराचार्यजी के विचार..

गेयं गीता नाम सहस्त्रं ध्येय
श्री पविरूपमजस्त्रम्।
नेयं सज्ञन संगे चित्तं देय
दीनजनाय च वित्तम्।।

''जीवन में गीता गान और श्री विष्णुसहस्त्रनाम का पठन करना है। श्रीपति का ध्यान करना चाहिए। चित्त सज्ञनों के संग में रखना और वित्त(लक्ष्मी) दिन दुःखी लोगों में बांटना चाहिए।''

4) श्री नीलकंठजी के मत से...

''महाभारत में सर्ववेद है। महाभारत का संपूर्ण ज्ञान गीताजी में है। इसलिए गीताजी सर्वशास्त्रमय है।''

विशेष में गर्व की बात यह है कि, पश्चात्य संस्कृति ने गीता ज्ञान को स्वीकार कर रहे है। वहाँ की कई युनिवर्सीटी में विद्यार्थी को पढाने के लिए अभ्यास काम में अन्य विषयों के साथ श्रीमद्भगवद्गीता एक विषय के रूप में सम्मेल किया कर रहे है।

''श्रीमद्भगवद्गीता'' माहात्म्यम् :

पृथ्वी देवी ने प्रश्न किया की मानव को एकनिष्ठ भक्ति कैसे प्राप्त होगी? श्रीहरि विष्णु ने उसका उत्तर दिया की... ''गीताजी का नित्य अनुसंधान से मानव कर्म शून्य बनता है, मुक्त बनना पडता है। एक भी पाप स्पर्श नही कर सकता, गीताजी जहा है, वहा सर्व तीर्थ स्थान शामिल रहता है। जहा गीता का अध्ययन होता है, वहा भगवान श्रीकृष्ण, सर्व पार्षदगण नारद, ध्रुव, योगी, नागो आदि उपस्थित रहता है। गीताजी के माध्यम से ही मैं त्रिलोक का पालन करता हूँ।''

संपूर्ण पाठ से मुक्ति मिलती है। आधा-पाठ से गोदान का पुण्य प्राप्त होता है, तृतीय भाग का पाठ करने से गंगास्नान का फल, षष्टम भाग का पाठ करने से सोमयाग का फल, नित्य एक अध्याय का पाठ से रुद्रलोक में निवास, कम से कम नित्य एक श्लोक का अध्ययन करने से मन्वंतर तक मनुष्य गति प्राप्त होती है। नित्य गीता अध्ययन से मानव धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष प्राप्त कर लेता है। और वैकुंठ में भगवान के साथ नित्य आनंद करता है। यही गीताजी की हम मानव को भेंट है।

संपूर्ण गीताजी का अप्रतिम सार क्या है? :

अर्जुन के प्रश्न के उत्तर में भगवान श्रीकृष्ण जीवन का अंतिम और अमोघ उपाय अपने आपको ठहराते हैं।

सर्वधर्मान्परित्यज मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(अध्याय 18, श्लोक 66)

''सर्व धर्म छोडकर तू मेरे शरण में आ जा, मैं तुमको सर्व पापों से मुक्त करूँगा''। अर्थात गीताजी का मुख्य सार यह है कि हमे प्रभु श्रीकृष्ण की शरण लेनी चाहिए। श्रीकृष्ण की शरण में जाने से सद्गति निश्चित है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

संख्या 91 में एक संस्कृत-श्लोक है। उसके अनुसार राजा वीरनारसिंहदेव (यादवराय) ने एक युद्ध में शत्रुओं पर विजय पायी थी। उस संदर्भ में उन्होंने पुष्पमाला, हाथी, धवल छत्र और अन्य प्रतीक बनवाये। अपना ''तुलारोहण'' (सुवर्ण से तोलना - तुलाभारम्) भी करवाया। उन्हें भगवान श्री वेंकटेश्वर को अर्पित किया। इस समर्पण में वेंकटगिरि को (तिरुमल) सुरगिरि (मेरु पर्वत) सम बतलाया गया।

संख्या 93, कुछ गायों और एक बैल के समर्पण का उल्लेख करता है। यह भी ज्योति कलश के लिए ही है। यह समर्पण तेवप्पेरुमाल नामक व्यक्ति से वीरनारसिंहदेवराय के राज्यकाल में ही हुआ है। दाता नेल्लूर के थे।

संख्या 94 तो वीरनारसिंहदेवराय द्वारा समर्पित भूदान से संबद्ध है।

संख्या 98 श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर से है। इसका समय कीलक नाम संवत्सर (शक संवत्सर 1230 और सन् 1308 ई.) है। इसमें श्री गोविंदराज स्वामी के लिए दैनिक और विशेष समयों (जैसे कैशिक द्वादशी - कार्तिक मास में आदि) के लिए आवश्यक सेवाएँ और अपमार्जकों के लिए अनुदान है। इनमें मार्गलि - द्वादशी, (मुक्कोटि द्वादशी - दिसंबर मास में), मकर संक्रमणम् (14 व 15 जनवरी) और चित्तिरै - विषु (तमिल नववर्ष - अप्रैल) भी हैं। यह समय दक्षिण में मालिक काफूर के आक्रमण का समय था। राजनैतिक उथल-पुथल का समय था। परिणाम स्वरूप इसमें किसी राजा का या अन्य भक्त के नाम का उल्लेख नहीं मिलता है। इस पुरालेख में मात्र शकवर्ष का ही उल्लेख है। यह अभिलेख मात्र विशेष पूजा को ही सूचित करता है। वह वर्ष के विशेष पर्व दिनों से संबन्धित एवं हिन्दू 'क्यालेंडर' के अनुसार ही है।

संख्या 99 श्री वेंकटेश्वर मंदिर से संबन्धित राजादेश की सूचना देता है। यह तिरुवेंकटनाथ यादवराय द्वारा ''आडि'' मास में उनके आठवें शासन वर्ष में आदेशित था। इसका वास्तविक अनुप्रवर्तन उनके शासन के नौवें वर्ष में हुआ है (लगभग सन् 1330 - 31 ई.)। इसमें पोंगलूर गाँव के 10 भागों में से 5 भागों का आयिक अंश 'सर्वमान्य' के रूप में समर्पित किया गया है। ये अंश पूर्ण रूप से कर मुक्त थे। यह देवदान तिरुवेंकटमुडैयान को 'आडि' मास में संपन्न होनेवाले उत्सव और अन्नप्रसाद की व्यवस्थाओं के लिए है।

इसका नियोजन सिंगय-दण्णायक्कर द्वारा रेचय दण्णायक्कर के नाम पर किया गया है। उक्त अनुदान में निर्देशित अन्य 5 भाग इस निर्देशात्मक आदेश से पहले ही समर्पित हैं। इसमें करों की मुक्ति से (लगभग 40) संबन्धित एक लंबी सूची भी है जो अंत में निर्देशित है।

[[जटावर्मन सुंदरपाण्ड्य - I के संदर्भ में उनके 14वें राज्य वर्ष में जो घटित हुआ है उसकी सूचना संख्या 45 में जिस प्रकार मिलती है उसी प्रकार तिरुवेंकटनाथ यादवराय के संबन्ध में भी सूचना मिलती है कि उनके 8वें शासन वर्ष में उन्होंने अपना राज्य खोया और 8वें तथा 9वें वर्ष के बीच ही फिर उन्होंने अपना राज्य वापस पा लिया। चाहे उन्होंने 8वें और 9वें वर्षों के बीच राज्याधिकार खोया हो फिर भी पुनःप्राप्ति के कारण 9वें वर्ष को उनके राज्याधिकार वर्ष के रूप में भी स्वीकारा गया है। इसीलिए उस अभिलेख में 9वाँ वर्ष कहा गया है और उसी वर्ष से समर्पण माना गया है। जैसे ही प्राचीन चोल और पाण्ड्य राजवंशों के शासन की समाप्ति हो गयी वैसे ही उनके सामंतों में राज्य के लिए झगडे आरंभ हो गये। इसी बीच होयसल वीर वल्लाल III ने द्वारसमुद्र पर अधिकार जमाया और अपने को तिरुवण्णामलै में राजा घोषित कर शासनाधिकार अपना लिया। तत्पश्चात् सन् 1342 - 43 तक अधिकार में रहे। हो सकता है कि तिरुवेंकटनाथ यादवराय ने वीर वल्लाल का विरोध किया हो। लेकिन उनके पराजित होने के कारण वीर वल्लाल राजा बने हों।]]

संख्या 100 और संख्या 101 (दोनों एक दूसरे की प्रतिलिपि ही हैं) गोविंदराज स्वामी के मंदिर से संबद्ध हैं। ये सर्वमान्य (करमुक्त) अनुदान हैं। ये अनुदान श्री वेंकटेश्वर को समर्पित हैं। इनसे यह सिद्ध है कि चाहे ये पूर्व समर्पण ही क्यों न हो, फिर इन अभिलेखों से कर मुक्ति की बात स्पष्ट होती है। संख्या 100 के अंत में कर मुक्ति की सूची भी है। इस का समय तिरुवेंकटराय का 12वाँ राज्य वर्ष है (सन् 1333 - 1334 ई.)।

संख्या 102 पोंगलूरु को देवदान के रूप में प्रस्तुत करने के उल्लेख से संबन्धित है। इसमें वह ग्राम सर्वमान्य देवदान के रूप में है। उससे संबन्धित सभी कर भी अदा किये गये है। यह तिरुवेंकटनाथ यादवराय द्वारा उनके 12वें शासन वर्ष में संख्या 99 के रूप में समर्पित है जिसके अनुसार आडितिरुणाल और संधि के लिए सिंगय-दण्णायक्कर द्वारा रेचय-दण्णायक्कर के नाम पर श्री वेंकटेश्वर को प्रदत्त समर्पण है। इस की सूचना श्री वेंकटेश्वर भगवान मंदिर के स्थानत्तार को दी गयी। इस पर सिंगय-दण्णायक्कर ने प्रार्थना भी की है कि स्थानत्तार उक्त ग्राम से फसल पर आगत आय को आडि-उत्सव और सितकरगंडन-संधि के लिए ही नहीं, बल्कि इस आय से वीर नारसिंग पेरुमाल और तिरुमंगै आल्वार को तिरुप्पोनकम् अर्पण भी संपन्न करें। ये तिरुपति की मूर्तियाँ हैं। इतना ही नहीं इसके बचे भाग से 32 श्रीवैष्णवों को सीता - करगंड - मठम् में खाने का प्रबन्ध (प्रसाद पाने की सुविधा) करें। अगर इस पर भी पैसा बचेगा तो उसे फुलवारी की सिंचाई तथा उसके लिए बनाई गई तालाब और अन्य परोपकारी कार्यक्रमों में खर्च करें। तिरुमल के स्थानत्तार से लगता है कि इन सब सूचनाओं और मुद्दों को मान लिया और उन सब को शिलालेख में सम्मिलित करने और ताम्र पत्र पर लिखने के लिए भी आपने सहमति दी।

संख्या 103 श्रीरंगनाथ यादवराय के आदेश का उल्लेख करता है। यह उनके तीसरे राज्य वर्ष में (सन् 1339 - 40 ई.) (संख्या 111 जिल्द I) संपन्न किया गया है। इस आदेश के अनुसार तिरुपति के बडे तालाब से एम्पेरुमानार-रामानुज के खेतों को पानी देने की बात स्पष्ट की गयी है। यह

तिरुवेंकटमुडैयान के लिए अधिकारदान है। यह भी तिरुवेंकटमुडैयान को 200 पणम् तिरुमुन्-कानिक्कै के (भेंट या मूल्य के रूप में) अर्पण के बाद निर्धारित हुआ है।

संख्या 104 दो मठों (धार्मिक संस्थाओं) की स्थापना की सूचना प्रस्तुत करता है। ये तिरुपति और तिरुमल से संबन्धित मठ हैं। यह महाप्रधानी इम्मडि राहुत्तरायन् मादप्पन सिंगय-दण्णायक्कर से संपन्न हुआ है। उन मठों को भी ब्रह्मचारियों की अधिरक्षा में रखकर उस जीयर से 1000 पणम् वसूल कर उसे मठों के निर्माण में तथा दो नंदनवन (पुष्पवनों) को लगाने में खर्च करने के लिए कहा गया है। तदनंतर सिंगय-दण्णायक्कर के निवास और अन्य कार्यों की खर्चा के लिए देना है।

[[इन दो मठों और पुष्प वाटिकाओं (नंदनवनम्) के सिंगय-दण्णायक्कर द्वारा संपन्न कराये जाने और उनको देशांतरि-जीयर के हाथों में संदर्शनार्थ अर्पित करने एवं उनको व्यवस्थित रूप में चलाने के मार्ग रूपायित करने में (सन् 1339 - 40 ई. में) चाहे आरंभ में मंदिर की सेवा की भावना ही क्यों न हो, धीरे धीरे तिरुमल पर जीयरों या जीयंगारों के अधीन आगे मंदिरों के उत्सव आदि से संबन्धित मान्य व्यवहार की, विचार-धारा की नींव दिखाई देती हैं। विशेषकर मंदिर के कार्यक्रमों के चालन में जीयरों की वाणी (प्रमुखतः प्रबन्धन में) जोर पाती दिखाई देती है और अन्ततोगत्वा वे ''धर्मकर्ता'' के पद पर भी शोभित हुए। इस स्थिति पर पहुँचते ही दो एकांतवासी स्थिर हुए - पेद्दजीयर स्वामी और चिन्नजीयर स्वामी - एक बडे और दूसरे छोटे। ये दोनों तेंगल वैष्णव ब्राह्मण परिवारों से चुने जाते हैं। पहले चिन्नजीयर स्वामी का (छोटे जीयर को) चयन होता है और बाद में उन्हीं को समय आने पर पेद्दजीयर (प्रधान जीयर) बनाया जाता है। दोनों जीयर स्वामियों के लिए दो मठ हैं। यह व्यवस्था तिरुमल और तिरुपति दोनों नगरों में की गयी है। दोनों दो मंदिरों से 'प्रसादम्' के साथ-साथ और आर्थिक अनुदान भी पाते हैं। दोनों के लिए अलग अलग सहायकों की व्यवस्था भी है। इनको ''एकांगी'' कहते हैं। ''एकांगी'' सहायकों की सहायता

से अपने प्रकार्यों और मंदिर के उत्सवों से संबन्धित कार्यों का निर्वहण करते हैं।]]

संख्या 104 के कुछ अनुबन्ध भी हैं। उसमें एक शर्त यह है कि जो प्रावधान जीयर की आजीविका के लिए किया गया है उससे संबन्धित सभी जायदाद जीयर के देहावसान के बाद दण्डनायक के पास वापस हो जायेगी और वे बाद में देशान्तरी की नियुक्ति करेंगे। ये स्वामी की सेवा (वेंकटेश्वर की) में रहेंगे। लेकिन इससे पहले उसको श्री-भण्डारम् में 400 पणम् अदा करने हैं। भगवान की उत्सवमूर्तियों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ करने का दायित्व भी होता है। भगवान की उत्सवमूर्तियों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ करना। ये उत्सव सामान्यतः उत्सव के चौथे दिन पर होते हैं। आखेट उत्सव के संदर्भ में भी विशेष व्यवस्थाएँ होनी चाहिए। उक्त पद्धति में नियुक्त अधिकारी अरिशाणालयन - नंदनवनम् और वण - शठकोपोपन - नंदनवनम् में रहते हैं और वहाँ से ही कार्यनिर्वहण करते हैं। इस कार्यनिर्वहण के लिए निवेशित 100 पणम् पर, (श्री-भंडारम् में पूँजी के रूप में समर्पित) आने वाली ब्याज से ही उक्त नियुक्त अधिकारियों को चलाना है। यह अभिलेखित (लिखा) रूप श्रीरंगनाथ यादवराय के 3वें राज्य वर्ष का है (सन् 1339 - 40 ई.)।

संख्या 105 श्रीरंगनाथ के 9वें वर्ष का है। इस में ''पाडियवेट्टै'' दिन के लिए दिये गये देवदान सूचित हैं (सन् 1345 - 46 ई.)।

क्रमशः

तीर्थ मुक्कोटि

- डॉ.बी.ए.वी.वर्मा

तीन करोड नदी-नदों का पवित्र जल स्वामिपुष्करिणी में जब भक्त जनों को मिलता है, वह समय है मार्गशिर मास के शुक्ल द्वादशी। यह सामान्यतः दिसंबर-जनवरी माह में होता है। इस वर्ष यह दिसंबर 31 तारीख को होता है। यह पवित्र स्थल तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी की पुष्करिणी है। यह वराहपुराण, वेंकटाचल माहात्म्यम् और पद्मपुराण में प्रस्तुत है।

वास्तव में यह पुष्करिणी, वैकुण्ठ में स्थित था। गरुड़ (विष्णु वाहन) इसे भूलोक को लाया था कि विष्णु भगवान भूलोक में श्रीनिवास के रूप में अवतरित है। इस पुष्करिणी में नहाने से त्रिवेणी संगम (गंगा, यमुना और सरस्वती का) में नहाने का फल मिलता है। ये जीवनदियाँ और तीर्थों का पवित्र जल, कुछ समय तक ही रहता है। वह समय है, सूर्योदय के पूर्व माने उस दिन सुबह 4.30 - 6.00 बजे के समय ही था। माने दिसंबर 31 का समय था।

उस दिन भक्तजन तीर्थ स्नानम, मंदिर दर्शन कर सकते है। इस संदर्भ में प्रत्येक होम, अभिषेक, पूजायें होती है। पहले भक्तजन ब्राह्मी मुहूर्त में पवित्र स्नान करेंगे। भक्तजनों का विश्वास है कि कई जन्मों का पाप मिट जाएगा और मुक्ति(मोक्ष) मिलेगा। उस के बाद भक्तजन श्री वेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन और विशेष पूजाएँ करेंगे। ये पूजाएँ वराहस्वामी को भी किये जाते हैं, क्यों कि पुष्करिणी वराहस्वामी पुष्करिणी माना जाता है।

इस पुष्करिणी का पवित्र स्नान से मानव का कर्मा, बुद्धि और आत्मा को विकास और देवाशीष मिलेगा और वह आरोग्य, सम्पदा और मुक्ति देता है।

वराहस्वामी स्वयं कहा था कि ''जो इस पवित्र दिन में पुष्करिणी (तीर्थ मुक्कोटि) में स्नान करेगा वे मुझे पहुँच सकते है माने भव बंधनों से मुक्ति पाते हैं।''

ऊपर कहा गया तीर्थ मुक्कोटि का विवरण वराहपुराण, पद्मपुराण और श्री वेंकटाचल माहात्म्यम् में वर्णित है।

वराहपुराण :

वराहक्षेत्र माहात्म्यम् कहता है कि विष्णु अवतार वराह, भूदेवी को वेंकटाचल के कई तीर्थों का पवित्रता बताता है। वह कहता है कि यह सामान्य तीर्थ नहीं, यह वैकुण्ठ से लाया गया था। इसलिए इन पवित्र जल से भक्त जन वैकुण्ठ प्राप्ति कर लेंगे।

पद्मपुराण :

एक दिन सभी देवता और ऋषि गण भगवान विष्णु के पास जाकर प्रार्थना की कि ''हे भगवान हमें और मानव को ऐसा पवित्र स्थल दिखाईए, जहाँ सभी तीर्थ मिलकर एक होंगे, उस से हम सबको मोक्ष प्राप्ति होंगे''

भगवान विष्णु हँसते कहा कि जब मैं वेंकटाचल में श्रीनिवास के रूप में अवतरित होता हूँ तब वर्ष में एक बार, धनुर्मास में द्वादशी के दिन संसार के सभी पवित्र जल पुष्करिणी में जमा होंगे। और कहा गया है कि ब्रह्मदेव देवताओं के सहित उस दिन पुष्करिणी के पवित्र जल में स्वामी के अभिषेक करेगा। इसलिए इस को ''ब्रह्म तीर्थोत्सवम'' भी कहा जाता है। इस में नहाने से सभी पुण्य तीर्थों में स्नान करने का फल मिलेगा।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम् :

भगवान विष्णु नारद से कहा कि उस तीर्थ मुक्कोटि के दिन ''मैं पुष्करिणी में प्रवेश करूँगा और इस में स्नान करनेवाले सभी भक्तों को भव बंधनों से मुक्ति दूँगा।'' उस दिन श्री वेंकटेश्वरस्वामी और पद्मावतीदेवी का भी पूजा किया जाता है।

फलश्रुति :

तीर्थ मुक्कोटि के दिन जो लोग इस में स्नान करते है और नैवेद्य चढ़ाते है, उन भक्त जनों को वैकुण्ठ लोक प्राप्त होगा और पुनर्जन्म नहीं होते, मोक्ष प्राप्त होता है।

(गतांक से)

अर्चावतारों द्वारा श्री यतीन्द्र का वैभव प्रकाशन

श्री प्रपन्नामृतम्

(59वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

जगद्गुरु यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्रीरंगम् में निवास करते हुये अपने भगवदानुरागी जिज्ञासु शिष्य समुदाय को तत्वहित पुरुषार्थ सम्बन्धी अर्थों का उपदेश करते हुये वेद शास्त्र प्रतिपादित विशिष्टाद्वैत दर्शन का प्रचार करने लगे। यतिराज के इस लोकोत्तर प्रभाव से निम्न निर्दिष्ट अर्चारूप एवं आचार्यों ने आपके जीवन की प्रवृत्तियों को प्रकाशित किया। श्रीरंगनाथ भगवान, श्री वेंकटेश भगवान, श्री वरदराज, श्री सम्पत्कुमार, श्री सुन्दरबाहु, श्री नाथमुनि, श्री यामुनाचार्य, श्री महापूर्णाचार्य, श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य, श्री भूरिशैलपूर्णाचार्य, महान् गुरु श्री मालाधराचार्य, श्री कुरेशाचार्य, श्री रंगदेवाचार्य, श्री वररंगाचार्य आदि एवं यतिराज श्री रामानुजाचार्य का शिष्य समुदाय तथा मूक, ब्रह्मराक्षस आदि और भी अनेकों तत्वदर्शी वृन्दों ने आपके वैभव का सम्यक् प्रकाशन किया।

जगदीश्वर भगवान श्रीरंगनाथ ने एक दिन यतिराज को बुलाकर श्रीदेवी भूदेवी के सम्मुख कहा कि- ''आपके सम्बन्ध रखने वाले जितने भी श्रीवैष्णव हैं तथा भविष्य में आपके सम्बन्धियों की परम्परा में जो अन्तिम पुरुष होंगे उनके तथा आपके जिये हमने अपनी दोनों विभूतियाँ प्रदान कर दी हैं।'' वृषभाचलपति श्री वेंकटेश भगवान ने श्रीरंगनाथ भगवान के वचनों को सुनकर विस्मय किया एवं उन्होंने भी यतिराज को बुलाकर कहा कि- ''हमने आपके लिये एवं आपकी परम्परा से सम्बन्ध रखने वाले वर्तमान तथा भावी जीवों के कल्याण के लिये अपनी दोनों विभूतियाँ आपको देदी हैं।''

यतिराज श्री रामानुजाचार्य को श्रीरंगनाथ भगवान एवं श्री वेंकटेश भगवान ने उनकी परम्परा से सम्बन्ध रखने वाले सभी वर्तमान एवं भावी आत्माओं के कल्याण के लिये उनके अपनी लीला विभूति (मृत्यु-लोक) एवं त्रिपाद विभूति (वैकुण्ठ लोक) प्रदान कर दी। जिससे कि यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने अपने जीवन काल में असंख्य जीवों का उद्धार किया और फिर भविष्य में उनसे सम्बन्ध रखने वाले जीवों के लिये मोक्ष का मार्ग सुलभ कर दिया।

एक बार यतिराज श्री रामानुजाचार्य वेंकटाद्रि की यात्रा को जा रहे थे। मार्ग में तौण्डुरुकोडी नामक एक भक्ता ग्वालिन ने आपको एवं श्रीवैष्णव मण्डली को दही विक्रय किया। जब वह दही का मूल्य ग्रहण करने के

लिये यतिराज के सम्मुख आई तो उनके व श्रीवैष्णव समुदाय के दर्शन करने के कारण एवं इससे पूर्ण श्री प्रणतार्तिहराचार्य के द्वारा दिये गये तीर्थ प्रसाद के कारण वह ज्ञान वैराग्य सम्पन्न हो गयी। उसने यतिराज से हाथ जोड़कर कहा कि- ''हे स्वामी! अब मुझे दधि का मूल्य नहीं चाहिये किन्तु उसके स्थान पर आप मुझे मोक्ष प्रदान करें।'' यह सुनकर अत्यन्त विस्मय करते हुये यतिराज ने कहा कि- ''मोक्ष प्रदान करना तो भगवान श्री वेंकटेशजी के आधीन है, तुम उनकी शरण में जाओ। वे तुम्हें अवश्य मोक्ष प्रदान करेंगे।'' यतिराज के इन वचनों को सुनकर भक्ता ग्वालिन ने कहा कि- ''यदि मोक्ष प्रदान करना भगवान के हाथ में है तो आप मुझे मोक्ष प्रदान करने के लिये उनके नाम से एक पत्र लिख दीजिये। वह पत्र लेकर मैं उनके पास चली जाऊँगी।'' करुणानिधि यतिराज ने उनकी बात मानकर मोक्ष प्रदान करने के लिये श्री वेंकटेश भगवान के नाम से एक पत्र लिख कर उसको दे दिया। ग्वालिन पत्र पाकर बड़ी प्रसन्न हुई और यतिराज वहाँ पर उपस्थित समस्त श्रीवैष्णव मण्डली को साष्टांग प्रणाम करके यह वेंकटाचल के लिये चल पड़ी। वेंकटाचल पर पहुँचकर सर्वप्रथम उसने स्वामिपुष्करिणी में स्नान किया, तदनन्तर ऊर्ध्वपुण्ड्र से विभूषित होकर विशाल आनन्दनिलय नामक भगवान के मंदिर की प्रदक्षिणा करके गरुड़ स्तम्भ के समीप भगवान की ओर वह पत्र समर्पित कर साष्टांग प्रणाम करके बोली कि- ''हे नाथ! मुझे मोक्ष देने की कृपा करें।'' यह कहकर वह ग्वालिन गरुड़ स्तम्भ के पास में शान्तिपूर्वक लेट गयी। भक्ताधीन श्री वेंकटेश भगवान ने यतिराज के पत्र से उस भक्ता ग्वालिन को अपना नित्य और श्रेष्ठ वैकुण्ठ धाम प्रदान किया। यतिराज के सम्बन्ध से कुछ भी नहीं जानने वाली ग्वालिन को परम दुर्लभ मोक्ष की प्राप्ति हो गयी। यह देखकर सभी लोगों को महान् विस्मय हुआ।

श्रीरंगनाथ भगवान और श्री वेंकटेश भगवान के बाद श्री वरदराज भगवान ने भी यतिराज श्री रामानुजाचार्य के वैभव को बढ़ाया। एक बार यतिराज ने विद्वत्-शिरोमणी यज्ञमूर्ति के साथ लोक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ किया, जो 18 दिनों तक निरन्तर चलता रहा। उक्त समय में जब आप यज्ञमूर्ति के प्रश्नों को समुचित उत्तर नहीं दे सके तब आपने श्री वरदराज भगवान की आराधना की। इससे प्रसन्न होकर भगवान श्री वरदराज ने यज्ञमूर्ति को पराजित करने के लिये आपको उपाय बतलाया। जिसके द्वारा फिर आपने महान् विद्वान यज्ञमूर्ति पर विजय प्राप्त की। फिर इसके बाद अन्य मतावलम्बियों के साथ में भी आपका शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमें आपकी पूर्ण विजय हुई। जिस समय में यतिराज कांचीपुरी में निवास करते थे, उस समय तो स्वयं भगवान श्री वरदराज ने महान् अद्वैती विद्वान पं० यादवप्रकाश को स्वप्न में कहा था कि- ''यतिराज श्री रामानुजाचार्य के साथ सम्बन्ध के बिना तो तुम्हारा उद्धार होना असम्भव है, इसलिये तुम उनकी शरण में जाकर उनकी प्रदक्षिणा कर उनसे त्रिदण्ड ग्रहण करो। इससे तुम मुक्त हो जाओगे।'' भक्तग्राम (तोण्डनूर) में निवास करते समय यतिराज को भगवान श्री यादवाद्रिनाथ ने स्वप्न में दर्शन देकर अपने उद्धार के लिये यादवाद्रि पर भगवत्प्रतिष्ठा करने का आदेश दिया था।

भगवान श्री सम्पत्कुमार ने यतिराज का पुत्रत्व स्वीकार किया था।

एक बार उत्सव काल में श्री सुन्दरबाहु भगवान ने कहा था कि- ''श्री रामानुजाचार्य के जितने भी आत्मीय है वे सन्निधि में आदृत हैं। सभी श्रीवैष्णव वहाँ आये परन्तु महापूर्णाचार्य के परिजन नहीं आये।'' इस पर भगवान ने उन्हें जब नहीं आने का कारण पूछा तो उत्तर में उन्होंने बताया कि- ''आपने केवल श्री रामानुजाचार्य के भक्तों का आह्वान किया था। हम अनाहूत थे।'' इस पर भगवान उन्हें समझाया कि- ''महाराज दशरथ तथा वसुदेव आदि ने मुझे पुत्र भाव से जिस तरह माना बस

उसी तरह रामानुजाचार्य लोकरक्षक तथा विभूतिद्वय नायक होने के कारण सर्वश्रेष्ठ है।''

एक समय में अत्रिवंशावतंश श्रेष्ठ प्रणतार्तिहराचार्य वृषभाचल पर पधारे थे। वहाँ उन्होंने आलवन्दार पाठ स्तोत्र भक्तिभाव से पाठ करते हुये सहसा भगवान सुन्दरबाहु को प्रणाम किया, और फिर बोले कि- ''मैं हजारों अपराधों का पात्र हूँ। भयंकर संसार सागर में गिर गया हूँ। जिसमें से निकलने में मैं बिल्कुल असमर्थ हूँ। बस इसके कारण ही अब मैं अपकी शरण में आया हूँ। अब आप मुझको स्वीकार करके अपना बना लें। इस श्लोकार्थ को सुनकर भगवान ने उनसे कहा कि- ''आप लोकरक्षक यतिराज श्री रामानुजाचार्य के शिष्य होकर अपने को अगति क्यों मानते हैं। जब तक कि यतिराज भूतल पर विराजमान हैं तब तक उनके सम्बन्ध से पापीष्ठ जीवों का भी मुक्ति निश्चय होगी।'' इस प्रकार कहते हुये उन्होंने यतिराज का सम्मान और भी बढ़ाया।

एक बार यतिराज श्री रामानुजाचार्य दिग्विजय यात्रा में कुरंग नगर पधारे। यहाँ आपने विशाल उन्नत विग्रह वाले श्रीकुरंग नगरीपूर्ण भगवान को प्रणाम करके सन्तोष किया। ''बारह हजार एकांगी महात्माओं, चौहत्तर पीठाधीश्वरों और असंख्य श्रीवैष्णवों के साथ आप श्रीरंगम् में निवास करते हैं।'' ऐसे विशाल वैभव से समावृत महातेजस्वी यतिराज को देखकर भगवान भी अत्यन्त विस्मित हुये और यतिराज से बोले कि- ''हमने सत, त्रेता, द्वापर आदि युगों में मनुष्यों की रक्षा के लिये श्रीदेवी सहित राम-कृष्ण के रूप में अवतार लिया था, परन्तु उस समय में सभी लोग मुझे मनुष्य के रूप में मानते और कहते थे कि राम एक आदर्श राजा हैं और कृष्ण एक महान गौ सेवक। हम लोगों की रक्षा के लिये वैकुण्ठनाथ भगवान ये अवतार ग्रहण किया है, ऐसा कोई भी मानने को तैयार नहीं था। किसी ने भी राम-कृष्णादि को जगत् का कारण स्वरूप स्वीकार नहीं किया था। बस इसी कारण से उन लोगों में से एक ने भी हमें प्राप्त नहीं किया। यतिराज! आपने ऐसे विमुख जीवों को किन उपाय, साधन या मन्त्र के द्वारा अपने वशीभूत किया है?'' भगवान की वाणी को सुनकर 115 यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने निवेदन किया कि- ''हे नाथ! यदि आप उस साधन या मन्त्र को सुनाना चाहते हैं तो जिस विधि से कोई शिष्य आचार्य से मन्त्र-दीक्षा लेता है, उसी क्रम से सुनिये।'' यतिराज के वचनों को सत्य मानकर भगवान ने उनको सुन्दर रत्न-जटित स्वर्ण सिंहासन पर बैठाया और स्वयं अपने विशाल स्वर्ण सिंहासन से उतरकर उनके सामने पृथ्वी पर बैठ गये। यतिराज ने अपने आचार्य श्री महापूर्णाचार्य की वहाँ उपस्थित मानकर आदर सहित भगवान के दाहिने कान में मन्त्ररत्न द्वयमन्त्र सुना दिया। सभी मन्त्रों में श्रेष्ठ जो द्वयमन्त्र एक बार के स्मरण मात्र से ही वैकुण्ठ प्रदान करता है और सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। इससे श्रीलक्ष्मीनारायण-मन्त्र, द्वयमन्त्र, न्यास, प्रपत्ति, शरणागति आदि अनेकों पर्यायवाची नाम हैं। इस प्रकार मन्त्र रत्न का माहात्म्य बताकर यतिराज ने भगवान कुरंगनगरीनाथ को अपना शिष्य बना लिया और उनका ''श्रीवैष्णव-पूर्णदास नाम रखकर समस्त संसार में प्रसिद्ध कर दिया। भगवान ने भी गौरव के साथ यह घोषणा की कि- ''मैं यतिराज श्री रामानुजाचार्य का शिष्य हूँ, यह समस्त संसार को ज्ञात हो।''

इस प्रकार से इस भूमि पर स्थित सभी दिव्यदेशों में विराजमाने वाले अर्चारूपी भगवद् विग्रहों ने वैभव की वृद्धि की। किसी ने पिता और किसी ने आचार्य रूप में उनका अपनाकर उनकी श्रीवृद्धि की।

।। श्री प्रपन्नामृत का 59वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

धनुर्मास माहात्म्य

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

हमारे शास्त्रों ने और ऋषियों ने मनुष्य के उद्धार के लिये कई सारे व्रत बताये है। हमारी संस्कृति में हर एक दिन और हर एक मास का विशेष महत्व है। ऐसा पवित्र मास ही 'धनुर्मास' है।

16 दिसम्बर से 14 जनवरी का जो समय है वो धनुर्मास के नाम से प्रचलित है।

धनुर्मास में मांगलिक कार्य वर्जित और प्रभु आराधना उत्तम है...

धनुर्मास में मांगलिक कार्य वर्जित है, इस का मूल कारण यह है कि, ये खगोलिय घटना है इस समय में सूर्य धनुष राशि में प्रवेश करता है। धनुष राशि का अधिपति गुरु और गुरु का अधिपति श्रीहरि विष्णु भगवान है। अर्थ ये हुआ है कि सूर्य और गुरु एक ही स्थान में आते है इसलिये तेजोद्वेष की संभावना बनती है। इस घटना से गुरु का तेज कम हो जाता है, गुरु निर्बल बनता है। तब शास्त्र हमे शुभ कार्य करने की अनुमति नहीं देते है। गुरु को सबल बनाने के लिए अधिपति श्रीहरि विष्णु की आराधना उत्तम की गई है।

धनुर्मास में श्रीहरि की आराधना उत्तम क्यों?

(1) धनुर्मास में सूर्य की गति दक्षिण की ओर रहती है, इसे दक्षिणायन कहते है। अर्थात इस अंधकारमय समय में प्रभु की आराधना करनी चाहिए।

(2) सामान्यतः धनुर्मास मार्गशिर मास में आता है, श्रीमद्भगवद्गीता के विभूतियोग में भगवान श्रीकृष्ण कहते है कि ''मासों में मार्गशिर मास मैं हूँ'' 'मासानां मार्गशीर्षोहं' इसलिये धनुर्मास में प्रभु आराधना उत्तम है।

(3) भगवान श्रीकृष्ण ने इसी समय में सांदीपनि ऋषि के आश्रम में रहकर धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी। इसलिये प्रभु को प्राप्त करने के लिए ये समय उत्तम कहा गया है।

(4) महाभारत की रक्त क्रांति इस समय में हुई थी इसलिये शुभ कार्य न करके सिर्फ प्रभु नाम स्मरण ही करना चाहिए।

(5) श्री स्वामीनारायण भगवान धनुर्मास में प्रातःकाल में हरिभक्तों को योगाभ्यास की शिक्षा प्रदान करते थे, ऐसे अनेकानेक कारणों से धनुर्मास में प्रभु श्रीहरि की आराधना उत्तम की गई है।

श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिए गोपिकाओं ने किया व्रत...

कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरी।
नन्दगोपसुतं देविपतिं मे कुरु ते नमः।।

(भागवत-खंड 2, अध्याय-22)

भागवत खंड में कहा गया है की गोपिकाओं ने श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिए इसी समय में 'कात्यायनी व्रत' किया था। इस व्रत से गोपिकाओं ने श्रीकृष्ण को पति के रूप में पा लिया।

श्रीविल्लीपुत्तूर गोदादेवी ने किया धनुर्मास का व्रत

दक्षिण क्षेत्र श्रीविल्लीपुत्तूर श्री धन्वीनव्यपूर में स्थित श्री विष्णुचित्त स्वामी की पुत्री आंडाल गोदादेवी ने भी कात्यायनी व्रत का अनुसंधान करके धनुर्मास का व्रत किया उसका नाम 'श्रीव्रत' है। व्रत में प्रातःकाल में उठकर निर्मल जल से स्नान करके शृंगार कि हर चीज का, दूध, घी सब का त्याग किया। साथ में तमाम गोपिकाओं और श्री संप्रदाय के सभी आल्वारों को भी शामिल किया। निष्णातों के मार्गदर्शन से प्रभु प्राप्त करने के लिये उपासना की। उपासना से दिव्यदेशों के सभी भगवान गोदा के स्वप्नों में आये, इस में से गोदा ने प्रभु श्रीरंगनाथ को पसंद किया। 27वा दिन में गोदाजी और प्रभु श्रीरंगनाथ का कल्याण संपन्न करता है। अंत में गोदाजी ने दिव्य रूप प्रकट किया और श्रीरंगम में स्थित श्रीरंगनाथ भगवान की प्रतिमा में समा गये। ये गोदाजी साक्षात् भूदेवी जी का अवतार है।

धनुर्मास का व्रत (तिरुप्पावै - श्रीव्रत)

गोदाजी ने कात्यायनी व्रत अनुसंधान से धनुर्मास का श्रीव्रत करके प्रभु श्रीरंगनाथ को पति के रूप में पा लिया। गोदाजी ने सोचा की संसार के सभी श्रीवैष्णव प्रभु की शरण प्राप्त करे इस विचार से गोदाजी ने 30 पाशुर का महाकाव्य लिखा। इस में धनुर्मास व्रत का पूरा विधान बताया गया है। ये दिव्यप्रबंध तिरुप्पावै श्रीव्रत के नाम से प्रचलित हुआ। इस तिरुप्पावै दिव्यप्रबंध सांसारिक मनुष्य को प्रभु के निकट आने का सही रास्ता दिखाते है।

श्रीवैष्णवों के लिये धनुर्मास व्रत विधि...

धनुर्मास कि व्रत विधि में श्रीवैष्णवों को प्रातःकाल जल्दी उठकर शीतल निर्मल जल से स्नान करके प्रभु श्रीहरि की आराधना करने का विधान है, विशेष में श्री विष्णुसहस्त्रनाम पाठ करना चाहिए। पूरे दिन में महत्तम श्रीहरि का नाम स्मरण करना चाहिए। साथ में श्रीवैष्णवों को प्याझ, लहसुन आदि का त्याग करके सिर्फ सात्विक भोजन ही लेना चाहिए। एक टंक भोजन या उपवास करके धनुर्मास व्रत करना चाहिए।

धनुर्मास का सार

कलिकाल में प्रभु नाम स्मरण की महिमा अपार है। इस मास में प्रभु नाम स्मरण करके हर दिन श्री विष्णुसहस्रनाम का पाठ करके गोदाजी की तरह मनुष्य भी प्रभु को प्राप्त करे और भगवान की शरण प्राप्त करे यही उद्देश्य है।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(श्रीमद्भवद्गीता - अध्याय-18, श्लो-66)

अनंताल्वान से रचित

‘श्री गोदा चतुःश्लोकी’

‘श्री गोदा चतुःश्लोकी’ नामक ये चार पादों का चौपाई, आंडाल माँ के बारे में वर्णित करते हुए, ‘श्री अनंताल्वान’ के द्वारा रचित ये श्लोक बहुत सुप्रसिद्ध है। भगवान विष्णु पर माँ आंडाल का भक्ति तत्परता इससे द्वारा मालुम पडता है। विशेष रूप से ‘धनुर्मास’ के संदर्भ में ये ‘गोदा चतुःश्लोकी’ श्लोक सप्तगिरि पाठकों के लिए दिया जा रहा है...

चक्रे गोदाचतुश्लोकीं यो
वेदार्थप्रगर्भिताम्।
श्रीवेंङ्कटेश सद्भक्तं
तमनन्तगुरुं भजे।।

अनंताल्वान की स्तुति करता हूँ, जिन्होंने वेदों के विचारों से भरी हुई गोदा चतुःश्लोकी की रचना की।

नित्याभूषा निगमशिरसां निस्समोत्तुङ्गवार्ता
कान्तो यस्याः कचविलुलितैः कामुको माल्यनल्तैः।
सूक्त्या यस्याः श्रुतिसुभगया सुप्रभाता धरित्री
सैषा देवी सकलजननी सिञ्चतां मामपाङ्गैः।।1।।

जिनकी वाणी वेदों के सिद्धांतों का नित्य आभूषण है; जिनके प्रेमी उनकी वेणी से उतारी हुई माला के लिए लालायित रहते हैं; जिनके पवित्र वचनों से यह संसार अब शुभ जागरण प्राप्त कर रहा है, ऐसी वह गोदादेवी मुझको सेवक के रूप में अपनी कृपा-कटाक्ष से आनंदित करें।

माताचेत्तुलसी पिता यदि तव श्रीविष्णुचित्तो महान्
भ्राता चेत् यतिशेखरः प्रियतमः श्रीरङ्गधामा यदि।
ज्ञातरस्तनयास्त्वदुक्तिसरसस्तन्येनसंवर्धिताः
गोदादेवि कथं त्वमन्यसुलभासाधारणा श्रीरसि।।2।।

हे गोदादेवी! यदि तुम्हारी माता तुलसी हैं; यदि तुम्हारे पिता महान श्री विष्णुचित्त (पेरियाल्वार) हैं; यदि तुम्हारे बड़े भाई यतिराज (रामानुजाचार्य) हैं; यदि तुम्हारे प्रियतम श्रीरंगनाथ हैं और यदि तुम्हारे पुत्र वे ज्ञानीजन हैं, जो तुम्हारे मधुर वचनों रूपी अमृत का पान करके पोषित हुए हैं, तो फिर इन समस्त महानताओं के होते हुए भी तुम साधारण मनुष्यों के लिए इतनी आसानी से प्राप्त होने वाली कैसे हो?

कल्पादौ हरिणास्वयं जनहितं दृष्ट्वेव सर्वात्मनां
प्रोक्तं स्वस्य च कीर्तनं प्रपदनं स्वस्मै प्रसूनार्पणम्।
सर्वेषां प्रकटं विधातुमनिशं श्रीधन्विनव्ये पुरे
जातां वैदिकविष्णुचित्ततनयां गोदामुदारां स्तुमः।।3।।

हम उस उदार गुण वाली गोदादेवी को नमन करते हैं, जिन्होंने कल्प के आरंभ में, भगवान द्वारा मनुष्यों के उद्धार हेतु बताए गए उसे गाना, उसकी शरण लेना और उसकी अर्चना करने जैसे साधनों को संसार जान सके, इसके लिए श्रीविल्लीपुत्तूर में विष्णुचित्त (पेरियाल्वार) की पुत्री के रूप में अवतार लिया।

आकूतस्य परिष्क्रियामनुपमामासेचनं चक्षुषोः
अनन्दस्य परम्परामनुगुणां आरामशैलेशितुः।
तद्दोर्मध्यकिरीटकोटिघटितस्वोच्चिष्टकस्तूरिका
माल्यामोद समेतात्मविभवां गोदामुदारां स्तुमः।।4।।

हम उस उदार गुण वाली गोदादेवी की स्तुति करते हैं, जो तिरुमलै अप्पन (भगवान वेंकटेश) की लीलाओं को सुशोभित करने वाली हैं; देखने वाले नेत्रों को आनंद देने वाली हैं; भगवान को हर प्रकार से योग्य हैं और जो उनके वक्षःस्थल तथा उज्ज्वल मुकुट पर अपने द्वारा धारण कर उतारी गई मालाओं की सुगंध फैलाती हैं।

अनुवादक - श्री के.रामनाथन

दि.30-10-2025 को तिरुमल श्री बालाजी के मंदिर में पुष्पयाग महोत्सव सप्तवर्ण शोभित रूप से संपन्न किया है। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., जी और अन्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

दि.17-10-2025 से दि.19-10-2025 तक श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी का पवित्रोत्सव कार्यक्रम ति.ति.दे. के द्वारा अत्यंत वैभव से आयोजित किया है।

भारी बारिश के कारण बांध भर गया था। इसलिए तिरुमल में स्थित 'पापविनाशनम् बांध' के पास दि.26-10-2025 को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी ने इस संदर्भ में विशेष पूजाएँ संपन्न किया है।

दि.31-10-2025 को तिरुमल में स्थित मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा अन्नप्रसाद केंद्र में आयुधपूजा को विशेष रूप से संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का ई.ओ. श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., जी ने भाग लिया।

दि.18-10-2025 को तिरुपति में स्थित ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के सामने हुए ति.ति.दे. मुद्रणालय में आयुधपूजा को विशेष रूप से संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., जी के साथ अन्य अधिकारिगण ने भाग लिया।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

81. तिरुक्कडित्ताणम

यह क्षेत्र तिरुवल्ल बाळ दिव्य क्षेत्र के पास है। तिरुवल्ला से कोट्टयम मार्ग में चेंगना चेरी (आठ कि.मी.) पहुँचकर वहाँ से 4 कि.मी. (दूसरी बस से) जाकर, तिरुक्कडित्तानम पहुँचेंगे।

मूलमूर्ति - अद्बुत नारायणन (अमृत नारायणन) पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कर्पक वल्लि।

तीर्थ - भूमि तीर्थ।

विमान - पुण्य कोटि विमान।

प्रत्यक्ष - रुक्मांगदन।

विशेष - इस मंदिर के श्रीकृष्ण एवं श्री नृसिंह की सन्निधियाँ हैं। रुक्मांगदन ने यहाँ राज्य शासन किया। रुक्मांगदन ने एकादशी व्रतों का अनुष्ठान कर, उस फल को, देवताओं को दिया। इस मंदिर को सहदेव ने जीर्णोद्धार किया। इसलिए सहदेव प्रतिष्ठा कहते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

82. तिरुच्चेङ्कुण्डूर - (चेंगणूर) (चिकुच्चिट्टूर)

यह दिव्य क्षेत्र, तिरुवल्ला से 10 कि.मी. की दूरी पर है। तिरुवनन्तपुरम-कोल्लम, एरणाकुल रेल मार्ग में चेंगण्णूर रेल स्टेशन है। बस से भी आ सकते हैं।

मूलमूर्ति - इमैयवरप्पन। पश्चिमाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - चेंकमलवल्लि।

तीर्थ - शंख तीर्थ, तिरुच्चिट्रारु।

विमान - जगज्योति विमान।

प्रत्यक्ष - रुद्र।

विशेष - स्थल पुराण में यह विवरण है कि धर्मपुत्र ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया। तिरुच्चिट्रार में स्नान कर भगवान के दर्शन कर शांति प्राप्त की। इसे धर्म-पुत्र प्रतिष्ठा भी कहते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

83. तिरुप्पुलियूर (कुट्टनाडु)

चेंकण्णूर दिव्य क्षेत्र से 5 कि.मी. की दूरी पर है। बस या आटो गाडी से जा सकते हैं।

मूलमूर्ति - मायरपिरान, पूर्वाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पोर्कोडि नाच्चियार।

तीर्थ - प्रज्ञा सरस, पूञ्चुनै तीर्थ।

विमान - पुरुषोत्तम विमान।

प्रत्यक्ष - सप्तऋषि।

विशेष - इस मंदिर को भीमसेन ने जीर्णोद्धार कर मूर्ति की प्रतिष्ठा की। इसलिए भीमसेन प्रतिष्ठा कहा जाता है। यहाँ ऐतिह्य है कि सप्तऋषियों ने इस मंदिर का निर्माण किया कि देवताओं में श्रीमन्नारायण को ही उत्तम कहकर देवता का निर्णय किया। सप्तऋषियों को भगवान ने मायप्पिरान के रूप में दर्शन दिए।

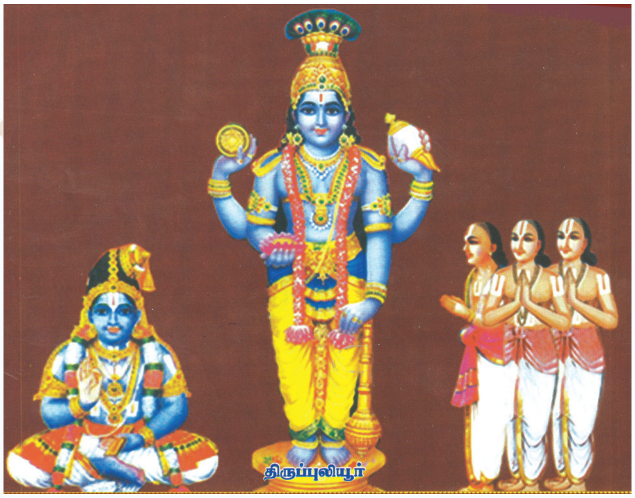

मंगलाशासन - 2 आल्वार, कुल 12 दिव्य पद।

84. तिरुवारन विळै (आरम् पुळा)

यह चेंकन्नूर से 9 कि.मी. की दूरी पर है। बस से जा सकते हैं।

मूलमूर्ति - तिरुक्कुरळप्पन - पूर्वाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - पद्मासनी नाच्चियार।

तीर्थ - वेदव्यास सरस, पम्पा तीर्थ।

विमान - वामन विमान।

प्रत्यक्ष - ब्रह्म, वेदव्यास।

विशेष - स्थल पुराण में इसका विवरण है कि अर्जुन ने यहाँ तपस्या कर इस मंदिर का जीर्णोद्धार किया।

एक टीले पर पंपा नदी के किनारे यह मंदिर जिसकी प्रतिष्ठा अर्जुन ने की।

मंगलाशासन - एक आल्वार, कुल 11 दिव्य पद।

क्रमशः

जनवरी 2026

- 01 नूतन अंग्रेजी वर्ष
- 07-13 श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
- 14 भोगी
- 15 मकर संक्रांति
- 16 कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
- 18 श्री पुरंदरदास आराधनोत्सवम्
- 23 वसंतपंचमी
- 25 रथसप्तमी
- 26 भीष्माष्टमी, भारत गणतंत्र दिवस
- 29 भीष्म एकादशी

कर्नाटक के हरिदास साहित्य में हनुमान

- डॉ.मैथिली प्र.राव

कर्नाटक के हरिदास आंदोलन से उत्पन्न भक्ति साहित्य, हरिदास साहित्य, भगवान हनुमान के गहन गुणों और वीरतापूर्ण कार्यों पर एक अनूठा प्रकाश डालता है। इस समृद्ध परंपरा में, पुरंदर दास जैसे संत-कवियों ने अनेक भक्ति गीतों की रचना के माध्यम से हनुमान की अटूट भक्ति, अपार शक्ति और गहन ज्ञान का गुणगान किया है और इस प्रिय देवता को समझने के लिए एक विशिष्ट दृष्टिकोण प्रदान किया है।

लोकप्रिय मत के अनुसार, यद्यपि वाल्मीकि जी ने ही 'रामायण में ही हनुमान को यथासम्भव महत्व दिया गया था, तथापि जनमानस में उनके प्रति भक्ति एवं उनमें अतुल-बल, भक्तों के रक्षक के रूप में चित्रित करने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623) को दिया जाता है जिन्होंने अपने 'रामचरितमानस' में हनुमान के लिए ही 'सुन्दरकाण्ड' की रचना की है। तुलसीदास ने, 'तुलसी रामहुँ तें अधिक राम भगत जिअँ जान' कहते हुए उन्हें एक आदर्श भक्त के रूप में चित्रित किया। बहुत कम इतिहासकारों ने इस तथ्य के प्रति अपना ध्यान दौडाया है कि उनसे भी पहले, दक्षिण भारत के महान विद्वान, द्वैत चिंतन के प्रतिपादक श्री मध्वाचार्य (1238-1317) जिन्होंने वायु और उनके अवतार हनुमान और भीम को असाधारण सम्मान दिया।

मध्वाचार्य द्वारा शुरू की गई हनुमान और भीम को शक्ति, सुरक्षा और ज्ञान के प्रतीक के रूप में सम्मानित करने की परंपरा को 15वीं शताब्दी में व्यासतीर्थ ने ही आगे बढ़ाया और हनुमान के 732 मंदिरों की प्राण-प्रतिष्ठा की! ये मंदिर आज के कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु में फैले हुए थे। वर्ष 2012 तक, लगभग 525 हनुमान विग्रहों का पता लगाया जा चुका था, जिसका मुख्य कारण श्री गौड़गेरे विजय कुमार आचार्य के निजी प्रयास थे, जिन्होंने इन मंदिरों की खोज में 45,000 किलोमीटर से भी अधिक की यात्रा की थी। इनमें सबसे प्रसिद्ध हम्पी स्थित यंत्रोद्धारक हनुमान मंदिर है।

मंदिरों में हनुमान का विशिष्ट चित्रण रामभक्त हनुमान के विपरीत वीर हनुमान का है; दूसरे शब्दों में भगवान का रौद्र रूप जो भूमि की रक्षा के लिए आवश्यक है। व्यासराय द्वारा प्रतिष्ठित आंजनेय(हनुमान) की पहचान के लिए भक्तगण कुछ विशेष विशेषताओं का उपयोग करते हैं, जैसे कि सिर के चारों ओर लिपटी पूँछ और अंत में एक घंटी। लगभग 150 वर्ष बाद, हिंदू मानस को तहस-नहस करने वाली इस्लामी ताकतों से लड़ने के लिए निडरता का संचार करना और शारीरिक स्वास्थ्य पर जोर देने के उद्देश्य से महाराष्ट्र के समर्थ रामदास (1608-1681) ने पूरे भारत में हनुमान मंदिरों की स्थापना की।

हरिदास साहित्य में, हनुमान, जिन्हें 'मुख्यप्राण' या 'आंजनेय' भी कहा जाता है, द्वैत दर्शन और विष्णु भक्ति से गहराई से जुड़े एक पूजनीय पात्र हैं। उन्हें अक्सर एक आदर्श भक्त के रूप में चित्रित किया जाता है, जो विष्णु का अवतार भगवान राम की सेवा और भक्ति के सिद्धांतों को मूर्त रूप देते हैं। हरिदासों ने हनुमान को समर्पित गीतों और स्तुतियों की रचना की है जिनमें उन्हें एक शक्तिशाली और दयालु देवता के रूप में पहचानते थे जो भक्तों को उनकी आध्यात्मिक यात्रा में

सहायता करते हैं। भीम और हनुमान के मिलन की कहानी हरिदास साहित्य में एक लोकप्रिय कहानी है, जिसका प्रयोग अहंकार-ह्रास के विषय और भक्ति के महत्व को दर्शाने के लिए किया जाता है। जहाँ भीम अपने बल के लिए जाने जाते हैं, वहीं हनुमान का चित्रण विनम्रता और एक उच्च शक्ति को पहचानने के महत्व को उजागर करता है। हनुमान, अपनी अपार शक्ति के बावजूद, अटूट भक्ति के साथ राम की सेवा करते हैं।

हनुमान को हरिदास परंपरा में 'मुख्यप्राण' कहते हैं। पुराण और वेदांत में वर्णित मुख्यप्राण, जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक प्राण वायु या जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह अन्य इंद्रियों पर श्रेष्ठता का प्रतीक है, जो आत्मा की एकता और आध्यात्मिक साधनाओं में, विशेष रूप से असुरों पर विजय पाने में, इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। मुख्यप्राण को ब्रह्म की अनंत प्रकृति का अवतार माना जाता है और यह सभी जीवों में प्रमुख जीवन शक्ति के रूप में कार्य करता है। यह प्राथमिक प्राण सामान्य वायु से भिन्न है और ब्रह्म के शुद्ध, आत्मनिर्भर सार को दर्शाता है। हिंदू धर्म में, विशेष रूप से द्वैत वेदांत परंपरा में, इसे भगवान हनुमान के साथ जोड़ा जाता है। मुख्यप्राण केवल साधारण वायु नहीं है, इसका एक आध्यात्मिक तात्पर्य है। इंद्रियों पर नियंत्रण प्राप्त करने में सहायक होते हुए उन्हें सही मार्ग पर भी ले जाता है। इस मुख्यप्राण की, विशेषतः मध्वाचार्य के द्वैत परंपरा के अंतर्गत, व्यापक रूप से पूजा की जाती है, विशेष रूप से मध्वाचार्य के अनुयायियों द्वारा और मुख्यप्राण के रूप में हनुमान को समर्पित मंदिर पूरे भारत में पाए जाते हैं।

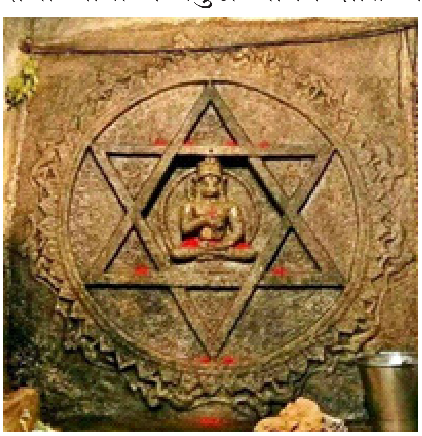

हरिदास कवियों ने लगातार हनुमान को भगवान राम के सर्वोत्कृष्ट सेवक के रूप में चित्रित किया उनका जीवन भक्तों के लिए एक शाश्वत आदर्श है, जो निःस्वार्थ सेवा और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का मार्ग दर्शाता है। यह विषय इतना प्रमुख है कि दास साहित्य संकलनों में समर्पित खंड अक्सर केवल हनुमान स्तुति गीतों के लिए समर्पित होते हैं। सभी हरिदासों ने किसी न किसी रूप में हनुमान की स्तुति की है एवं https://dasasahitya.net/ के अनुसार कुल मिलाकर 59 कीर्तन हैं जो हनुमान को समर्पित हैं। इनमें सर्वाधिक रचनाएँ श्री पुरंदरदास द्वारा प्रकट होती हैं। अन्य हरिदासों में श्री गोपालादास जी, गुरु गोविंदविट्ठलदास जी, श्री हनुमेशदास जी, श्री जगन्नाथदास जी, श्री कल्लूरु सुब्बण्णदास जी, श्री कनकदास जी, श्री मध्वाचार्यदास जी, श्री महिपति दास जी, श्री गुरु विजय विट्ठल जी, श्री मोहनदास जी, श्री नरहरि विट्ठलदास जी, श्री प्राणेशदास जी, श्री प्रसन्नवेंकटदास जी, श्री प्रेम दास (अभिनव जनार्दन विट्ठल) जी, श्री श्यामसुन्दरदास जी, श्री श्रीपादराज तीर्थ जी, श्री वादिराज तीर्थ जी, श्री विद्याप्रसन्न तीर्थ जी, श्री विजयदास जी, श्री व्यासराज तीर्थ जी ने हनुमान के व्यक्तित्व एवं उनके कार्यों के आधार पर अनेक कृतियों की रचना की है।

श्री गोपालदास जी ने अपनी रचनाओं में हनुमान के उपलब्धियों की वंदना करते हुए एक भजन में कहा है, ''रामदूर के कमल रूपी चरणों में जिसे स्थान मिल जाए वो धन्य है!'' (रामदूतन पाद तामरसव कंड, आ मनुजने धन्यनो) एक अन्य रचना में उन्होंने हनुमान को 'यंत्रोद्धार' के स्वरूप को संबोधित किया है और उन्हें 'धीर योगासनधारी' कहते हुए विभिन्न संदर्भों में विभिन्न रूपों में उनके व्यक्तित्व के चमत्कार को चित्रित किया है।

श्री गुरु गोविंद विट्ठलदास जी ने प्रार्थना करते हुए कहा है, ''हे मेरे प्राण! मुझे दर्शन दो, इस संसार के रक्षक, मुझे दर्शन दो, कर्मों में हैं लीन सभी जीव, करो उनका उद्धार हे बलबीर।। पांच रूपों में हो तुम संसार में व्याप्त, दुष्टों के संहारक, कृपा करो।।'' उसी रचना में वे हनुमान का वर्णन करते हुए उन्हें 'ध्यान में लीन मुख्यप्राण' कहकर संबोधित करते हैं।

श्री जगन्नाथदास जी ने अपनी एक रचना में हनुमान से कृपा याचना करते हुए कहते हैं, ''दुर्मरण से मेरी रक्षा करो, हे वायुदेव!'' इन पंक्तियों में वायुदेव को दयालु कहा गया है, अर्थात दीन-हीनों पर प्रेम करने वाला। भक्त मानते हैं कि इस संसार में वायुदेव के अतिरिक्त कोई दूसरा आश्रय नहीं है। वे प्रार्थना करते हैं कि हे सज्जनों, हमारे साथ प्रतिदिन दासों जैसा व्यवहार करना आपके लिए उचित नहीं है, यह आपके लिए निःशुल्क नहीं है। एक अन्य रचना में श्री जगन्नाथदास कहते हैं कि ''करण के स्वामी, इन्द्रियों के स्वामी और तीनों लोकों के स्वामी हरि आपके भीतर हैं। इससे बढकर भला और क्या सौभाग्य हो सकता है?'' वे प्रार्थना करते हैं कि आप कल्याणकारी हैं। आप ही वासना के रोग से मुक्त करने वाले हैं, हे पवननारायण, आप यम के कष्ट को दूर करें।'' हनुमान को प्राणदेव के रूप में उद्बोधित करते हुए कहते हैं, ''प्राणदेवा नीनल्लदे काय्वर काणेनु ई जगदोळगे'' अर्थात ''हे प्राणदेव, इस संसार में आप ही मेरे एकमात्र रक्षक हैं, कोई अन्य नहीं है।'' श्री मोहनदास ने हनुमान के 'यंत्रोद्धारक' रूप का आवाहन करते हुए अपनी रक्षा एवं उद्धार की याचना की है।

''सुंदरकांड निर्णय'' श्रीमन् मध्वाचार्य द्वारा रचित 'महाभारत तत्पर्य निर्णय' (MTN) का एक अध्याय है। 'सुंदरकांड निर्णय' वृहद 'महाभारत तात्पर्य निर्णय' का एक भाग है, जो रामायण को व्यापक रूप से समाहित करता है। यह वाल्मीकि रामायण के सुंदरकांड के सार को संक्षेप में प्रस्तुत करता है, जिसमें 68 अध्यायों को 49 श्लोकों में संक्षेपित किया गया है। यह संक्षिप्त संस्करण हनुमान की लंका यात्रा, सीता से उनकी भेंट और राम के पास उनकी वापसी जैसे प्रमुख घटनाओं पर केंद्रित है परंतु इन घटनाओं को द्वैत दर्शन के अनुरूप व्याख्यायित करता है। प्राणसूत्र के अनुसार, यह हनुमान की राम के प्रति भक्ति और मात्र एक सहायक के बजाय एक दूत के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। 'सुंदरकांड निर्णय' का पाठ शुभ एवं लाभदायक माना जाता है।

श्री महिपति दास अपनी रचना में हनुमान की स्तुति करते हुए कहते हैं, ''जयजयकार करो, हनुमान की शरण में आओ। अंजनी के गर्भ में पले, रघुवर राम की सेवा में खडे, लांघकर समुद्र को श्रीदेवी की खबर लाए, रावण की सेना का संहार करने वाले।'' उसी स्तुति में भीम और बादरायण को भी हनुमान का ही स्वरूप कहते हुए उनकी भी स्तुति करते हैं और वर्णन करते हैं

कि हनुमान के चरणों में अपने आप को समर्पित कर देना चाहिए। (जयजयएंदु शरणएन्नि हनुमय्यगे)।

हनुमान को समर्पित एक मात्र रचना में श्री नरहरि विट्ठलदास जी ने हनुमान, भीम के पराक्रम का वंदन किया है, राम के प्रति श्रद्धा और भक्ति का वर्णन करते हुए प्रार्थना करते हैं, ''हे दयानिधान! मुझपर प्रेम और करुणा बरसाओ!''

एक अन्य भजन में श्री प्रसन्न वेंकट जी ने हनुमान को माता-पिता; की श्रेणी में रखते हुए कहा है कि 'जिसने भी पूरी भक्ति के साथ तुम्हारी प्रार्थना की तुमने उनकी रक्षा की।' और याचना की है कि, ''मेरे लिए तो तुम एक ही आधार हो!''

पुरंदर दास द्वारा रचित ''हनुमान मतवे हरिय मतवु, हरि मतवे हनुमान मतवु'' (हनुमान की मंशा ही हरि की मंशा है, हरि

के विचार ही हनुमान के विचार हैं) इसका एक विशेष रूप से उल्लेखनीय उदाहरण है। यह रचना हनुमान और भगवान हरि (विष्णु) के विश्वासों के बीच पूर्ण सामंजस्य को खूबसूरती से व्यक्त करती है, और एक आदर्श भक्त का चित्रण करती है यह प्रभावशाली अभिव्यक्ति भक्त और देवता के बीच गहन एकता को रेखांकित करती है, हनुमान को भक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करती है, जहाँ विचार और कर्म ईश्वरीय इच्छा के साथ सहज रूप से प्रतिध्वनित होते हैं। पुरंदरदास द्वारा ही रचित एक और गीत है ''बिड्डुवेनैय्या हनुमा, सुम्मने बिड्डुवेनैय्या'' (क्या तुम मुझे छोड़ दोगे, हनुमान? क्या तुम मुझे ऐसे ही छोड़ दोगे?) एक और मार्मिक भजन है, जो हनुमान की कृपा और सुरक्षा पर साधक की निर्भरता का सार प्रस्तुत करता है। इन पंक्तियों में भक्त हनुमान की निरंतर उपस्थिति की याचना करता है, जो मानव आत्मा और दिव्य सेवक के बीच के गहन बंधन को उजागर करता है। एक अन्य गीत में वो कहते हैं, ''गेद्देयो हनुमंत, असुरर वोद्देयो हनुमंत'' (''विजयी हुए हनुमान, तुमने असुरों का नाश किया हनुमान'') जिसमें उनकी वीरता एवं शौर्य का विशद वर्णन करते हुए उन्हें 'धीर महाबल, शूर पराक्रम, वीर, समीर उदार गंभीर'' के विशेषणों से उद्बोधित करते हैं। हनुमान के प्रति अपनी पूर्ण आस्था प्रकट करते हुए एक अन्य गीत में वो कहते हैं, ''स्वप्न में, मन में, हो व्यथा कोई यदि, हनुमान के स्मरण से भाग जाएँ सभी भीत'' और सभी भक्तों को प्रेरित करते हुए ''सज्ज्ञनों'' से कहते हैं, ''संजीवराय का स्मरण करो तो भय किस बात का हो।'' एक अन्य रचना में उन्होंने हनुमान और रावण के बीच में एक संवाद दिखाया है जिसमें रावण हनुमान को 'कोति' (बंदर) कहकर संबोधित करते हैं और पूछते हैं कि ''तुमने इस सात समुद्रों को कैसे पार किया?'' तो वो उत्तर देते हैं कि ''मुझे ये सात समुद्र नाले की भाँति लगे, अपने हाथों के द्वारा तैरते हुए आ गया।''

श्री वादिराज तीर्थ जी उन्हें 'अमर वंदित' कहकर संबोधित करते हैं तो एक अन्य भजन में कहते हैं कि, ''हनुमान, तुम सदा-विजयी हो! कृष्णावतार के समय भीम के रूप में अवतरित हो, सभी दुष्टों का नाश किया... मतिहीन, पापियों का उद्धार करने के लिए, तुमने अत्यंत वेग से मध्व यति के रूप में अवतार ग्रहण किया।''

श्री विद्याप्रसन्न तीर्थ जी की रचना थोडी भिन्न है जिसमें उन्होंने यह तो व्यक्ति किया है कि ''हम सब हनुमान के परिवार के सदस्य हैं'' परंतु उनसे लोकनीति का संदेश देते हुए कहते हैं, ''ऊर्ध्वपुण्ड्र की ओर देखो, आस्था और भक्ति देखो। उन सिद्धांतों को देखो जो हृदय में हैं। जो लोग कहते हैं कि ऐसी कोई बात नहीं है, वे सच नहीं कह रहे हैं। देखिए कि ऋषि मध्व ने हमें सच्चा ज्ञान दिया है। हम सच और झूठ के बीच का अंतर जानते हैं। हम अच्छे और बुरे के बीच अंतर नहीं करते हैं। हमें यह आभास है कि हमारे आस-पास दृश्य-अदृश्य सब में सर्वोत्तम हरि ही हैं। हम जानते हैं कि अनेक लोक हैं। हम अनेक योनियों में जन्म लेते हैं। बुद्धिमान लोग हमें सत्य सिखाते हैं। श्रीहरि के सुखद विचारों से हमें ज्ञान प्राप्त होता है।'' (हनुमन मनेयवरु नावेल्लरु)।

श्री विजयदास जी एक विशेष प्रकार की रचना के लिए प्रसिद्ध हैं जिसे 'सुळादि' कहते हैं। इसका अर्थ है सुलभद-हादि अर्थात सरल मार्ग - श्रीहरि-वायु-गुरुओं की कृपा प्राप्त करने और श्रीहरि के धाम तक पहुँचने का एक सुगम मार्ग। हरिदास ने इन सुळादि के माध्यम से साधकों को तत्ववाद का सार प्रदान किया। साहित्य के इस रूप में विशेष रूप से श्री विजयदास का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे ''सुळादि दासरु'' के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने मुख्यप्राण स्तोत्र, सुळादि, प्राणदेवर चरण महिमा सुळादि, यंत्रोद्धारक प्राणदेवर सुळादि जैसी अनेक रचनाएँ हनुमान को समर्पित की हैं। इन्होंने भी अपनी अनेक रचनाओं में हनुमान और भीम की स्तुति एक साथ की है। उदा. नडे नडे नम्म मनेगे अर्थात ''चलो, चलो, हमारे घर चलो! रामदूत बनकर राक्षसों का नाश किया, सीता तक राम की मुद्रिका को पहुँचाने वाले दयासिंधु।''

त्रिविक्रम पंडिताचार्य की बहन, कल्याणी देवी, हरिदासों की स्त्री परंपरा में एक प्रमुख नाम है। उन्होंने भी वायु पर एक लघु रचना लिखी, जिसमें उनके गुणों का बखान किया गया है और हनुमान, भीम और माधव के तीन अवतारों का उल्लेख किया गया है। इस रचना को भी लघु वायु स्तुति कहता जाता है। यह छह छंदों में है। यह 22 पंक्तियों की एक लघु रचना है जिसमें चार-चार पंक्तियों के पाँच अनुच्छेद हैं और अंतिम अनुच्छेद में केवल दो पंक्तियाँ हैं। यह स्तुति एक लघु रचना है। इसमें कल्याणी देवी वायु और उनके अवतार की स्तुति करती हैं। प्रत्येक छंद की दूसरी पंक्ति में वे एक ही वाक्य का प्रयोग करती हैं - ''आनंदतीर्थ महामुनिराजं गोविंद भक्त शिखामणिमिदे।''

श्री पादराज तीर्थ के शिष्य व्यास तीर्थ या व्यास राजा ने कन्नड़ और संस्कृत साहित्य को व्यास कूट नामक भक्ति कार्य का एक समूह दिया। उन्होंने भी आचार्य को समृद्ध श्रद्धांजलि अर्पित की है। वे कहते हैं, ''वारिजवदना समिराजा कपि नृप द्विजना भवि अजना।'' यहाँ, व्यास तीर्थ जी हनुमान, भीम और मध्व के तीन रूपों की व्याख्या तो करते हैं साथ ही उस विश्वास को भी व्यक्त करते हैं कि द्वैत परंपरा के सूत्रधार श्री मध्वाचार्य जी हनुमान के ही अवतार हैं।

संक्षेप में, हनुमान कर्नाटक के हरिदास साहित्य में एक केंद्रीय पात्र हैं, जो केवल एक पौराणिक पात्र नहीं हैं वरन भक्ति और सेवा के आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं, और अनगिनत भक्तों को विश्वास और समर्पण के साथ अपनी आध्यात्मिक यात्रा जारी रखने के लिए प्रेरित करते हैं। यंत्रोद्धारक एवं मुख्यप्राण के रूप में भी उनकी शक्ति को आवाहित करते हैं। हरिदास साहित्य में हनुमान अटूट विश्वास, निस्वार्थ सेवा और ईश्वर भक्ति के माध्यम से मुक्ति के मार्ग के प्रतीक हैं।

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

संकीर्तन का तेलुगु शीर्षक

‘‘कोंडल लो नेलकोन्न कोनेटि रायडु वाडु’’

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

पहाडों में बसे पुष्करों का (कोनेटि रायडु)
स्वामी वह

पहाडों जैसा वर देनेवाले स्वामी वह

।।पहाडों में बसे।।

दास कुम्हार कुरुवति नंबी को

मुँह मांगे सारे वर देनेवाला स्वामी वह

लडाकू चक्रवर्ति तोंडमान में

भरोसे मंद बन अपने पास बुलाने वाले स्वामी वह

।।पहाडों में बसे।।

खुशी से अनंताल्वार की

टोकरी भर कर मिट्टी ढोनेवाले स्वामी वह

स्नेह करके तिरुमल नंबी के साथ

गलत सही बात करके गुस्सैल बनानेवाले स्वामी वह

।।पहाडों में बसे।।

कंचि में रहनेवाले तिरुकच्ची नंबी पर

दया करके अपने पास बुलानेवाले स्वामी वह

कितने भी ऊँचे स्थान (सात पहाडों पर) पर हो
वेंकटेश्वर अपनाकर

कृपा-सागर बन आदर करनेवाले स्वामी वह

।।पहाडों में बसे।।

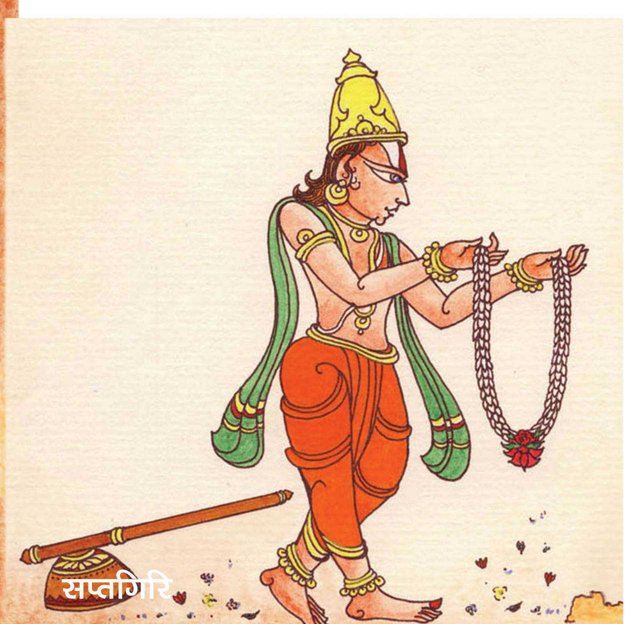

भावार्थ :

भगवान श्री वेंकटेश्वर सप्तगिरीश कहलाते हैं। शेषाद्री, नारायणाद्री, वेंकटाद्री, अंजनाद्री आदि सात पहाडों के उस पार कलियुग वैकुंठ मानेजाने वाले वेंकटाचल पहाडों में वे बसे हुए हैं। इस रूप में सप्तगिरियों में बसने के बावजूद अपने भक्तों की उपेक्षा वे नहीं करते हैं। बल्कि जाति, धर्म आदि को बुलाकर सब पर समान रूप से दया बरसानेवाले स्वामी कलियुग में कोई है तो वे श्री वेंकटेश्वर ही हैं। इस संकीर्तन में अन्नमय्या ने भगवान श्री वेंकटेश्वर के इस अनन्य गुण का कीर्तन किया है।

अन्नमय्या ने इस संकीर्तन में श्री वेंकटेश्वर को 'कोनोटि रायडु' नाम से पुकारा है। तेलुगु में 'कोनेरु' का मतलब 'पुष्करिणी' है। 'रायडु' का मतलब राजा या स्वामी है। यानी तिरुमल पहाड में श्री वेंकटेश्वर के आनंदनिलय मंदिर के ईशान में रहनेवाली पुष्करिणी, जिस के अंदर से अंतर्वाहिनी के रूप में विरजा नदी के प्रवाहित होने का विश्वास किया जाता है, पुष्करिणी के स्वामी के रूप में अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर भगवान को संबोधन किया है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी सदा अपने भक्तों की देखरेख करते हैं।

अन्नमय्या ने इस संकीर्तन में श्री वेंकटेश्वर के अनेक भक्तों का उल्लेख किया है। जिन का उद्धार स्वामी ने जाति, धर्म आदि को बुलाकर समभाव से किया है। उन भक्तों में कुम्हार भी है और चक्रवर्ति भी है। अपने भक्तों के प्रति समभाव रखनेवाला और कोई स्वामी इस कलियुग में नहीं हुए हैं। वे वेंकटेश्वर ही पुष्करिणियों का स्वामी हैं।

हिंदी में भूरी वरदान देने को छप्पर फाडकर देना कहते हैं। वहीं तेलुगु में पहाड जैसे वरदान देना कहते हैं। प्रस्तुत संकीर्तन में पहाडों में बसे स्वामी पहाड जैसे वरदान देते हैं। वह भी मांगे या बिना मांगे। परमात्मा अपने भक्तों की विनतियों को सुनने के पहले ही पहचानते हैं। मांगने के पहले उन्हें वरदान देते हैं। प्रस्तुत संकीर्तन में अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के ऐसे भक्तों का नामोल्लेख करके श्री वेंकटेश्वर भगवान का यशोगायन किया है।

सर्व प्रथम में सात पहाडों के उस पार बसे सप्तगिरीश को अन्नमय्या ने पुष्करिणियों के स्वामी के रूप में घोषित किया है। साथ ही पहाड जैसे वरदान देनेवाले कलियुग के इकलौते स्वामी के रूप में घोषित किया है। मिट्टी के बर्तन बनानेवाले कुम्हार तिरुकच्चि नंबी ने स्वामी से जो कुछ भी मांगा है। उसे सहर्ष देनेवाले स्वामी ये ही श्री वेंकटेश्वर स्वामी है। तिरुकच्चि नंबी तिरुपति में रहनेवाला एक गरीब कुम्हार है। उस के पास गरीबी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। वह तिरुकच्चि नंबी रोजाना जीविका के लिए मिट्टी के बर्तन बनाने के बाद बची हुई मिट्टी से मिट्टी के फूल तैयार करके स्वामी को समर्पित करता था। ऐसे मिट्टी के फूलों को ही राजा महाराजाओं के द्वारा समर्पित स्वर्ण के पुष्पों से अधिक छाव से स्वामी स्वीकार करते थे। ऐसे स्वामी श्री वेंकटेश्वर हैं। बदले में कि तिरुकच्चि नंबी ने जो कुछ मांगा स्वामी ने उसे दे दिया।

अपने भाई के बेटे सुदान के साथ लडाई करनेवाले तोंडमान चक्रवर्ति को भी शांत करके उस के मन में विश्वास पैदा करके अपने दास बनाने वाले स्वामी और कोई दूसरा नहीं है, आप ही हैं। बाद में तोंडमान चक्रवर्ति, जो अपने ससुर जी आकाश राज का छोटा भाई है, आप का ही भक्त बन गया। जहाँ बुलाया वहाँ आने के लिए तैयार हो गया। इस रूप में एक कुम्हार तिरुकच्चि नंबी और एक सम्राट तोंडमान दोनों को सम भाव से आश्रय देनेवाले स्वामी आप ही हैं।

श्री वेंकटेश्वर का एक और भक्त अनंताल्वार हैं। जो रोजाना स्वामी को फूल मालाएँ समर्पित किया करता था। फूल उगाने के लिए सिंचाई के लिए उसने अकेले कुआँ खोदना शुरू किया था। उस की इस मेहनत को देखकर आप ही स्वामी पिघलकर उस की सहायता करने खुशी से टोकरी में मिट्टी उठाने की कोशिश स्वामी ने की थी। तब उस भक्त के हाथों से पावडे की मार को भी सहने के तैयार हुए। ऐसा स्वामी और कोई दूसरा नहीं है बल्कि सात पहाडों के स्वामी आप ही हैं।

श्री वेंकटेश्वर का एक और भक्त तिरुमल नंबी है। जो तिरुमल पहाड पर स्वामी की सेवा करने के लिए तिरुमल में बसे प्रथम नागरिक माना जाता है। आनंदनिलय मंदिर के पास झोंपडी बनाकर स्वामी की अभिषेक सेवा के लिए हर दिन भोर सुबह दूर पर स्थित आकाशगंगा तीर्थ से मटकी भर कर पानी लाता था। बिजली हो, बारिस हो उस की परवाह किए बिना तिरुमल नंबी नित्य यह काम करता था। अपने इस भक्त के कष्ट को दूर करने के लिए स्वामी स्वयं एक गंवार आदमी के रूप में आकर उसे जान बूझ कर झगडा करके पास में ही आकाशगंगा को प्रवाहित होने की कृपा करनेवाले स्वामी और कोई दूसरा नहीं है बल्कि श्री वेंकटेश्वर ही हैं।

तिरुमल से दूर कांचीपुरम में रहनेवाले, अपने प्रति अनन्य भक्ति रखनेवाले तिरुकच्चि नंबी की भक्ति की पहचान करके उसे तिरुमल में लाने का श्रेय भी इसी सात पहाडों के स्वामी श्री वेंकटेश्वर को जाता है। ऐसे कलियुग के स्वामी श्री वेंकटेश्वर सात पहाडों के ऊपर बसने के बावजूद भी सदा वे अपने भक्तों के हृदय में ही बसते हैं। अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। अपनी करुणा से पहाड जैसे वरदान देकर अपने दास बना लेते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको अवश्य ध्यान रखें।

- तिरुमल-यात्रा के लिए निकलने के पूर्व अपने इष्ट अथवा कुलदेवता की प्रार्थना करें।
- भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन करने के पूर्व श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करें, श्री वराहस्वामीजी की पूजा करें।
- मंदिर के अंदर भगवान पर ही ध्यान केंद्रित करें।
- मंदिर के अंदर पूर्णतः मौन रहें तथा ''गोविंदा'' का उच्चारण करें।
- तिरुमल के पास स्थित पापविनाशनम्, आकाशगंगा पवित्र तीर्थों तथा अंजनाद्रि आंजनेय (हनुमान) मंदिर को दर्शन करें।
- तिरुमल में रहते समय हमारे रीति-रिवाजों, आचार-व्यवहारों का पालन करें।
- अपनी भेंट हुंडी में ही डालें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों को स्वच्छ रखें और पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों को मात्र ही उपयोग करें।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

ओंटिमिट्टा, श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर

आंध्रप्रदेश, कडपा जिला, ओंटिमिट्टा प्रांत में विराजित श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर बहुत प्राचीन श्रीराम मंदिर है। इस प्रांत को 'एकशिलानगर' भी कहते हैं। इस मंदिर का निर्माण जांबवंत ने किया। इस आलय से संबंधित दर्शन एवं सेवा का विवरण निम्नांकित हैं।

मंदिर का दर्शन समय

प्रातः 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक भगवान जी को दर्शन कर सकते है।

प्रातः 5.00 बजे से सुबह 7.30 बजे तक दर्शन

सुबह 7.30 बजे से सुबह 8.15 बजे तक प्रथम घण्टानाद

सुबह 8.15 बजे से सुबह 10.30 बजे तक दर्शन

सुबह 10.30 बजे से सुबह 11.15 बजे तक द्वितीय घण्टानाद

सुबह 11.15 बजे से सायं 5.30 बजे तक दर्शन

सायं 5.30 बजे से सायं 6.15 बजे तक तृतीय घण्टानाद

सायं 6.15 बजे से रात 8.45 बजे तक दर्शन

रात 8.45 बजे से रात 9.00 बजे तक एकांतसेवा

भगवान जी का सेवा टिकट विवरण

1) कल्याणोत्सव - रु.1,000/- दो व्यक्ति के लिए, समय सुबह-9.00 बजे को

2) अभिषेक - रु.150/- दो व्यक्ति के लिए, हर शनिवार, समय सुबह-6.00 बजे को

3) स्वर्ण पुष्पार्चन - रु.250/- एक व्यक्ति के लिए, हर रविवार, समय सुबह-8.30 बजे को

सूचना

मंदिर के प्रांगण में स्थित काउण्टरों में (या) ऑनलाइन के माध्यम से भी टिकट प्राप्त कर सकते है। कृपया भेंट हुण्डी में ही डालें।

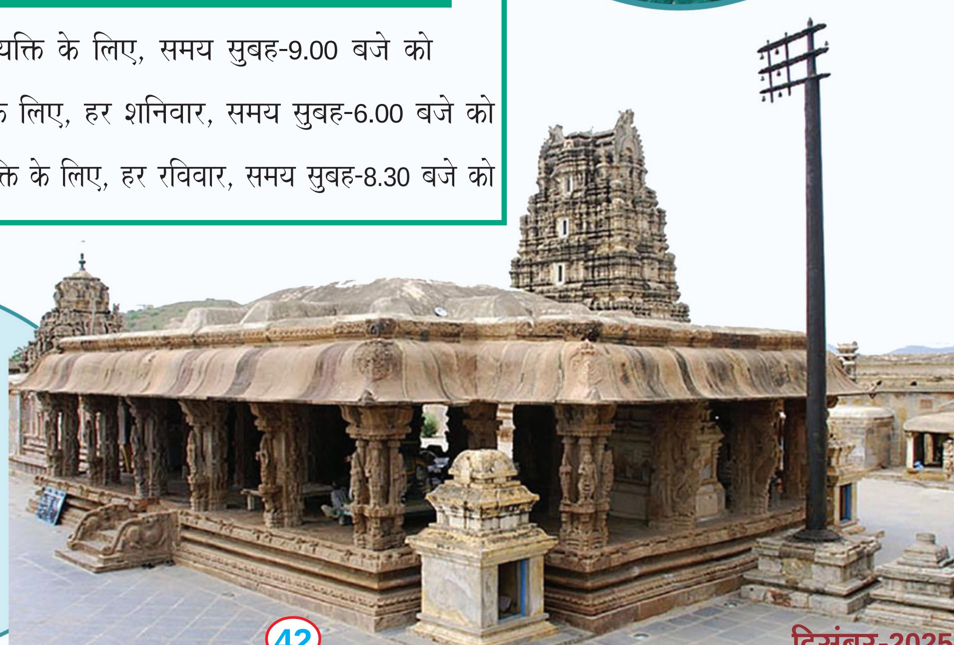

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

तन्नैयु त्ताटूचेय्यम् तन्मैयिनोर्, मन्नु तामरैत्ताळ्
तन्नैयु त्ताट्चेय्य एन्नै युत्तानिन्नु, तन्तहवाल्
तन्नै युत्तारन्नि त्तन्मैयुत्ता रिह्लैये न्नरिन्दु
तन्नै युत्तारै, इरामानुजन् गुणम् शात्तिडुमे ॥९७॥

साक्षात् स्वपादप्रवणाः किंकरा यद्यपि सुलभाः; तथाऽपि स्वभक्तजनगुणकीर्तनरता दासदासास्सुदुर्लभा इति भावयन् भगवान् रामानुजः तादृशसुदुर्लभपुरुषार्थ प्रापयितुं परमकृपया मां स्वपादाब्जकिङ्कर - सत्पुरुषपादारविन्दकिङ्करं व्यधित॥ (भगवद्भक्तापेक्षया भगवद्भक्तभक्ताश्चरम - पर्वनिष्ठा यथा खलु विशिष्यन्ते तथा साक्षादाचार्यभक्तापेक्षया आचार्यभक्तभक्ता विशिष्यन्ते। तादृशमाधिक्यं स्वस्मिन्ननुगृहीतवान् श्रीरामानुज इति सानन्दमनुसन्धीयतेस्म)।

> जैसे भगवद् भक्ति की अपेक्षा भगवद् भक्त भक्ति श्रेष्ठ मानी जाती है, ठीक इसी प्रकार आचार्य भक्ति से भी बढ़कर आचार्य भक्त भक्ति श्रेष्ठ है।

''मेरे भक्त तो मिलते हैं, परंतु उन भक्तों के गुणकीर्तन करने के स्वभाववाले मिलते नहीं''; यों विचार करते हुए श्री रामानुज स्वामीजी ने आज अपनी विशेष कृपा से मुझे, अपना (श्री स्वामीजी का) आश्रय लेकर सेवा करने के स्वभाववाले (अर्थात् अपने भक्तों के) सुंदर उभय पादारविंदों का सेवक बना दिया। (विवरण - जैसे भगवद्भक्ति की अपेक्षा भगवद्भभक्ति (अथवा आचार्यभक्ति) श्रेष्ठ मानी जाती है, ठीक इसी प्रकार उस आचार्यभक्ति से भी बढकर आचार्यभक्तभक्ति श्रेष्ठ है। अब श्री रामानुज स्वामीजी ने सोचा कि, सभी लोग मेरे भक्त बनना चाहते हैं; कोई मेरे भक्तों का भक्त बनता नहीं। इस अमुदनार को यह भाग्य दूँ। अतः उन्होंने परमकृपा से मुझे (अमुदनार को) अपने भक्त श्री कूरेशस्वामीजी का भक्त बना दिया।)

क्रमशः

मुक्कोटि एकादशी

- डॉ.जी.मोहन नायुडु

वैकुंठ एकादशी हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। वैकुंठ एकादशी के दिन वैकुंठ द्वार अर्थात् स्वर्ग का द्वार खुला रहता है। इसलिए यह मान्यता है कि वैकुंठ एकादशी के दिन व्रत रखनेवाले मोक्ष प्राप्त करते हैं और मृत्यु के बाद सीधे स्वर्ग जाते हैं। इसे मुक्कोटि (त्रिकोटि) एकादशी भी कहते हैं।

वैकुंठ एकादशी समस्त एकादशियों में सबसे शुभ माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि इस दिन व्रत रखने से 23 एकादशी व्रत के बराबर फल मिलता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार वैकुंठ शब्द का अर्थ है भगवान विष्णु का निवास, जहाँ किसी भी चीज की कमी नहीं। संस्कृत में एकादशी शब्द का अर्थ है शुक्ल पक्ष या ग्यारहवाँ चंद्र दिवस।

वैकुंठ एकादशी का इतिहास :

वैकुंठ एकादशी से संबंधित कथाएँ इस प्रकार हैं -

पद्मपुराण के अनुसार भगवान विष्णु ने मुरान नामक राक्षस से युद्ध किया। इस युद्ध के लिए एक हथियार बनाने के लिए वे एक गुफा में जाकर जब विश्राम ले रहे थे तब राक्षस ने उस गुफा में जाकर उन्हें मारने का प्रयत्न किया। लेकिन उसके प्रयास निष्फल हो गये। उस समय भगवान विष्णु के शरीर से एक महिला रूप में एक शक्ति निकली और उस शक्ति ने राक्षस का अंत किया। भगवान विष्णु ने उस शक्ति को एकादशी नाम से संबोधित किया। उस शक्ति की विनती पर विष्णु ने उसे एक वर भी दिया था कि एकादशी के दिन कोई उपवास रखता है तो उसे मोक्ष मिलेगा।

इसलिए यह मान्यता है कि जो भक्त एकादशी के दिन श्रद्धापूर्वक उपवास रहकर पूर्णनिष्ठा के साथ रहते हैं तो वे मोक्ष प्राप्त करते और मरने के बाद स्वर्ग जाते हैं। अतः यह परंपरा उसी दिन से प्रारंभ हुई। वैकुंठ एकादशी के दिन विशेषकर वैष्णव भक्त वैष्णव धाम या स्वर्ग पहुँचने के लिए स्वयं उपवास रहते हैं। भगवान विष्णु का धाम या वैकुंठ द्वार वर्षभर बंद रहता है। केवल वैकुंठ एकादशी के दिन ही भक्तों के लिए वैकुंठ द्वार खुला रहता है। इसलिए भक्त पूर्ण निष्ठा के साथ उपवास रहकर मोक्ष प्राप्त करते हैं या स्वर्ग पहुँचते हैं। विश्वास है कि हिंदू किसी भी एकादशी के दिन चावल नहीं खाते क्यों कि चावल में राक्षस मुरान निवास करता है।

फाल्गुन माह के कृष्णपक्ष एकादशी को वैकुंठ एकादशी कहते हैं। इसे पंकोद्धार एकादशी या विजय एकादशी भी कहते हैं। विजय एकादशी का व्रत रखनेवाला अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करता है। पौराणिक कथा के अनुसार सीताजी का पता लगाने के लिए श्रीरामचंद्र वानर सेना के साथ समुद्र के उत्तर तट पर खडे थे और उस समय रावण जैसे बलवान शत्रु और सागर की गंभीरता को लेकर चिंतित थे।

तब मुनियों ने उन्हें विजय एकादशी का व्रत करने का परामर्श दिया। व्रत के प्रभाव से सागर पार करके राम ने रावण का वध किया।

वैकुंठ एकादशी के इतिहास से संबंधित और एक कहानी है कि इसी दिन सागर मंथन किया गया था। इस सागर मंथन के समय क्षीर सागर से जो अमृत निकला वह देवताओं में वितरित किया गया। इसलिए भक्तों का विश्वास है कि वैकुंठ एकादशी के दिन मरनेवाले मोक्ष प्राप्त करते हैं या वैकुंठ पहुँचते हैं। इसका समर्थन महाभारत की एक युद्ध घटना से होता है जिसमें भीष्म पितामह प्राण त्यागने के लिए एकादशी तक प्रतीक्षा करते हैं और वे बाण शय्या पर विश्राम लेते हैं। इसलिए इस एकादशी को भीष्म एकादशी भी कहते हैं।

अन्य मत के अनुसार किसी समय सुकेतुमान नामक राजा था। उनकी कोई संतान नहीं थी। ऐसी स्थिति में राजा बहुत चिंतित था कि उनकी मृत्यु के बाद उनके पूर्वजों को मोक्ष कौन दिलाएगा? इसके बाद राजा ने अपना राज्य छोडकर वन चले गये। राजा ने वन में ऋषि-मुनियों से मिलकर अपनी समस्या बताई तो मुनियों ने पुत्रदा एकादशी का व्रत करने की सलाह दी। राजा ने विधिपूर्वक पुत्रदा एकादशी व्रत संपन्न किया, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें संतान की प्राप्ति हुई।

वैकुंठ एकादशी का महत्व :

सनातन धर्म में वैकुंठ एकादशी का बडा महत्व है। एकादशी का व्रत रखनेवाले भक्तों की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति

होती है। मृत्यु के बाद उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। वैकुंठ एकादशी से जुडी हुई इस पौराणिक कथा से इसका महत्व सिद्ध होता है। गोकुल नगर में एक वैखानस नामक राजा शासन कर रहा था। राजा के राज्य में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। राजा स्वयं अपनी प्रजा की रक्षा करते थे। एक दिन रात में राजा को सपने में उनके पिता नरक की यातनाएँ भोगते हुए दिखाई दिये। सपने में ही उनके पिता कह रहे थे कि हे पुत्र मुझे इस नरक की यातनाओं से मुक्ति दिलाओ। तब राजा ने सुबह ब्राह्मणों को बुलाया और सपने के बारे में बताया।

ब्राह्मणों ने सुझाव दिया कि हे राजन्! आप पर्वत ऋषि के आश्रम में जाइए आपकी समस्या का समाधान मिल जाएगा। राजा ने तुरंत ऋषि के आश्रम में जाकर सपने के बारे में बताया। तब ऋषि ने कहा कि पिछले जन्म में किये गये पाप कर्मों के कारण आपके पिता को इस जन्म में नरक की यातनाएँ भोगनी पड रही है। इन यातनाओं से मुक्त कराने के लिए वैकुंठ एकादशी व्रत करने के लिए राजा से कहा।

ऋषि की आज्ञानुसार राजा ने वैकुंठ एकादशी व्रत किया और उसके प्रभाव से राजा के पिता को नरक से मुक्ति मिल गयी। राजा ने सपने में स्वर्ग जाते हुए अपने पिता को देखा। इसलिए वैकुंठ एकादशी के दिन व्रत करके वैष्णव मंदिरों में वैकुंठ द्वार का दर्शन होता है।

वैकुंठ एकादशी के सुअवसर पर तिरुमल श्री वेंकटेश्वर (बालाजी) के मंदिर में वैकुंठ द्वार का आयोजन होता है। इस समय लाखों भक्त पूर्ण श्रद्धा के साथ वैकुंठ द्वार का दर्शन करते हैं। भक्तों का विश्वास है कि ऐसा करने से उनको मुक्ति मिलेगी और मरने के बाद वैकुंठ पहुँचेंगे।

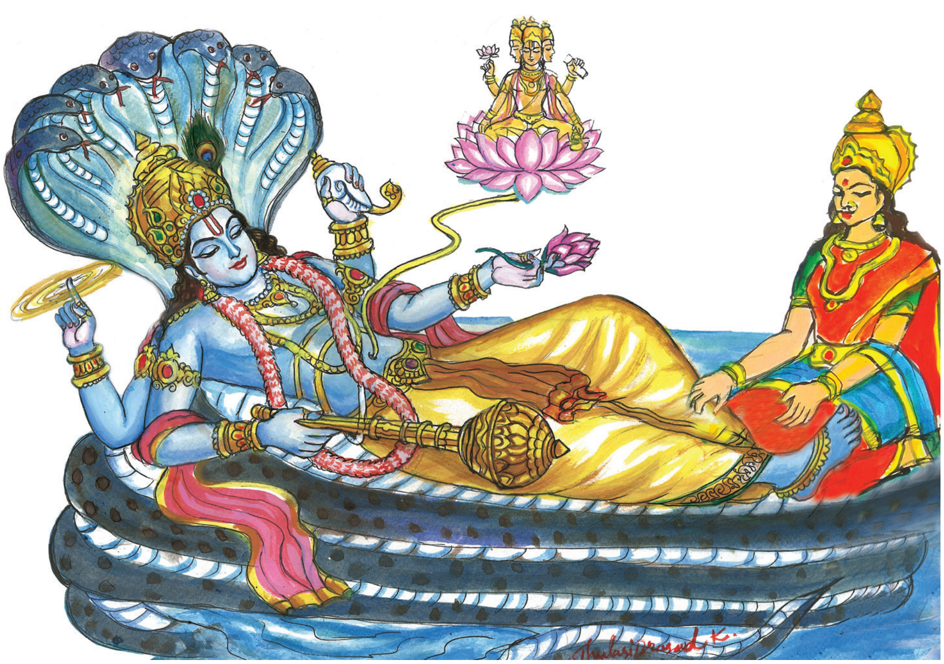

निष्कर्ष :

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है कि वर्षभर में सनातन धर्म में अनेक धार्मिक कार्य किये जाते हैं। उनमें वैकुंठ एकादशी का बडा महत्व है। इस अवसर पर व्रत और उपवास रखते हैं जो इनका अपना महत्व है। भक्तों का विश्वास है कि व्रत, उपवास रहकर वैकुंठ द्वार दर्शन करने से मोक्ष मिलता है।

इतना ही नहीं अपने पूर्वजों के पापों का नष्ट करके उन्हें नरक लोक से मुक्ति प्रदान करते हैं। वैकुंठ एकादशी व्रत से जीव की समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। इसलिए तिरुमल में भगवान श्री वेंकटेश्वर का वैकुंठ द्वार दर्शन करने के लिए भारत और विश्व के कोने कोने से लाखों भक्त आते हैं।

दिसंबर महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - मंगल भाग्यस्थान में तथा गुरु की पूर्ण दृष्टि के कारण गत बिगड़े कार्यों में सुधार तथा स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। नित्यकर्म में व्यवधान, तनाव-विवाद से कष्ट, कार्यक्षेत्र में श्रम-पूर्ण सफलता, शैक्षणिक गतिरोध, आर्थिक संतुलन, विचारों में उग्रता, सामाजिक संलग्नता, उत्तरार्ध में ग्रहों का परिवर्तन मिश्रित प्रभावकारी, रोजी-रोजगार में प्रगति, यात्रा सुखद, शत्रु विजय। धर्म-कर्म में रुझान तथा शुभ कार्यों पर खर्च होगा।

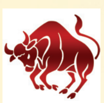

वृषभ राशि - मासारम्भ में शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से संघर्ष एवं कठिनाईयों के बावजूद कार्य क्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। राजकार्य में अनुकूलता, आर्थिक संतुलन, सट्टा-लाटरी से नुकसान, उद्योग-व्यापार में श्रमपूर्ण प्रगति उत्तरार्ध में सूर्य-बुध मंगल का बदलाव शुभ प्रभावी, कार्य सिद्धि, शैक्षणिक उत्कर्ष, शत्रु विजय, उत्तरार्ध में मिलाजुला प्रभाव दिखेगा, संतान कष्ट।

मिथुन राशि - विचारों में उग्रता, शक्ति संवर्धन, शत्रु विजय, कौटुम्बिक तनाव, स्वास्थ्य सामान्य दैवी कृपा का लाभ, संवाद से हर्ष, उद्योग व्यापार में श्रमपूर्ण सफलता मिलेगी। रचनात्मक पक्ष में व्यय, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आय कम व खर्च अधिक रहेगा। परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी।

कर्कटक राशि - गुरु के कारण व्यवसाय कार्य में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। सामाजिक विकास, दैनन्दिनी जीवन की नियमिता से आरोग्य सुख, संवाद से हर्ष, आर्थिक उत्कर्ष, राजकीय सहयोग, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, व्यापार सफल रहेगा। मंगल की नीच दृष्टि रहने से भूमि सम्बन्धी कार्यों में परेशानी तथा साझेदारी के कार्यों में हानि होगी।

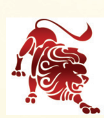

सिंह राशि - मानसिक-शारीरिक व्यथा, निरर्थक तनाव विवाद से कष्ट, प्रतियोगी क्षेत्र में श्रमपूर्ण सफलता, दाम्पत्य सुख, पठन-पाठन में रुचि, रोजी-रोजगार में अनुकूलता, संतान कष्ट। विशेष परिश्रम एवं पारिवारिक सहयोग के बावजूद कार्य सिद्धि में विलम्ब होगा। उत्तरार्ध में गोचरीय परिवर्तन शुभप्रभावी रहेगा। समस्याओं का समाधान।

कन्या राशि - बुध तृतीयस्थ रहने से आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। राशि शुभ पाप राश्येश होने से मासफल सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य बाधा, आर्थिक संतुलन, सहयोगियों से अनुकूलता, विद्या बुद्धि का विकास, रोजी-रोजगार में श्रम पूर्ण सफलता। उत्तरार्ध शुभ प्रभावी रहेगा। सामयिक-सामाजिक विकास, पठन-पाठन में उदासीनता। स्त्री-संतान सुख मिलेगा।

तुला राशि - नवीन योजनाओं का शुभारम्भ, आत्मीय जनों का सहयोग-समर्थन, नौकरी में उल्लास, संतान पक्ष की भाग्योन्नति, उद्योग-व्यापार में सफलता, शुभ संवाद, आर्थिक उत्कर्ष, दाम्पत्य सुख, उत्तरार्ध में सकारात्मक बदलाव के बाद भी व्ययाधिक्य, स्त्री कष्ट, यात्रा व्यथा, पुत्र सुख। आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक रहेगा।

वृश्चिक राशि - मासारम्भ में किसी नवीन कार्य को कार्यरूप देने का प्रयास लाभकारी रहेगी। शुभ विचारों का उदय, विपरीत स्थितियों में सुधार, आरोग्य सुख, पारिवारिक सुख सौहार्द में वृद्धि, साधु समागम, रोजी-रोजगार में सफलता। उत्तरार्ध में मंगल का परिवर्तन बनते कामों में विघ्न, घरेलु व आर्थिक परेशानियाँ बढ़ेगी। दाम्पत्य जीवन सौहार्द पूर्ण, व्यापारिक अनुकूलता।

धनुष राशि - गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से धन लाभ, स्वास्थ्य सामान, तनाव-विवाद दुर्घटना से कष्ट सम्भव, आर्थिक पक्ष अनुकूल रहेगा। इष्ट-मित्र-अधीनस्थ लोगों का सहयोग, रोजी-रोजगार में श्रमपूर्ण सफलता, नौकरी सुखद, उत्तरार्ध में मिला-जुला प्रभाव दिखेगा। रोजगार के नये अवसर, आर्थिक लाभ बढ़ेगी। यात्रा सुख। उच्चप्रतिष्ठित लोगों से संबन्ध बनेंगे।

मकर राशि - केतु अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। दैनन्दिन जीवन की अनियमितता से स्वास्थ्य बाधा, शक्ति संवर्धन, राजकीय पक्ष का सहयोग, यात्रा सुखद, गृह-भूमि, कृषि कार्यों में प्रगति, नौकरी में उल्लास, आर्थिक संतुलन। उत्तरार्ध में सूर्य का परिवर्तन शुभ रहेगा। संतान पक्ष से सुखद अनुभूति, व्यापार में अनुकूलता, यात्रा का योग।

कुंभ राशि - व्यावसाय में उन्नति, लाभ का क्रम बना रहेगा। अप्रिय समस्याओं का समाधान, इष्ट मित्रों-कुटुम्बियों से हर्ष, विशिष्ट कार्यों में प्रगति, आर्थिक विकास, गृह-भूमि सम्बन्धी पक्ष में मजबूती, नवीन पदाधिकारी की प्राप्ति। पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु खर्च अधिक, मानसिक तनाव और स्वभाव में क्रोध की भावना अधिक रहेगा।

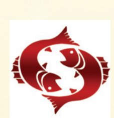

मीन राशि - गुरु पुनः चतुर्थस्थ तथा भाग्येश मंगल भाग्य स्थान में होने से आय के साधनों में वृद्धि तथा मनोरंजन, वाहनादि साधनों पर धन खर्च होगा। साहस-पराक्रम की वृद्धि, नये लोगों से सम्पर्क, रहन-सहन में बदलाव, शक्ति संवर्धन, दाम्पत्य जीवन सुखी, विशिष्ट व्यक्तियों का समागम, व्यावसायिक उन्नति, नौकरी में उल्लास। परन्तु क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है।

(नीतिकथा)

उचित उपहार

- श्रीमती प्रेमा रामनाथन

रत्नपुर नामक गाँव में केशव नाम का एक गरीब किसान रहता था। उसकी पत्नी सरला बहुत दयालु और गुणी थी। उनके दो बच्चे थे। जब केशव खेत में काम करता था, तो उसकी पत्नी भी उसके साथ आकर मदद करती थी। इसी तरह जब उसकी पत्नी घर पर खाना बनाती थी, तो केशव पत्नी के मना करने पर भी उसकी मदद करता था। इस तरह वे दोनों अपने बच्चों के साथ उस छोटी सी झोंपड़ी में रहते थे। उनकी कड़ी मेहनत के बावजूद, उनकी कमाई बहुत कम थी। फिर भी वे जो कुछ भी मिलता था उसी से संतुष्ट रहते थे।

केशव के दादा एक जड़ी-बूटी के वैद्य थे। इसलिये उन्होंने केशव को बचपन में ही कई दुर्लभ जड़ी-बूटियों और उनके प्रभावों के बारे में सिखाया था। उस अनुभव का उपयोग करके केशव अपने खेती के काम से बचे समय में बीमार लोगों का जड़ी-बूटियों से इलाज करता था। उसके इलाज से बहुत से लोग ठीक हो गए। केशव अपनी चिकित्सा सेवा के लिये किसी से पैसे नहीं लेता था। इसलिये उसकी प्रसिद्धि गाँव में फैल गई थी।

शेखर उसका पड़ोसी था। वह एक किराने की दुकान चलाता था। वह सामान पर बहुत ज्यादा लाभ रखकर बेचता था। इसलिये गाँव के

लोग उसकी दुकान से खरीदारी करने से बचते थे। केशव का पूरे गाँव में अच्छा नाम देखकर शेखर का मन ईर्ष्या से भर गया।

एक बार देश में लुटेरों का आतंक बहुत बढ़ गया था। इससे राजा राजसिंह बहुत चिंतित थे। दिन-ब-दिन लुटेरों के आतंक से लोगों की परेशानी बढ़ती जा रही थी। यह देखकर राजा ने अपने अनुभवी मंत्रियों को बुलाया और लुटेरों को नियंत्रित करने के तरीकों पर चर्चा की। एक मंत्री ने कहा, ''महाराज, ये लुटेरे आमतौर पर अमावास्या के दिन ही लूटपाट करते हैं। इसलिये आनेवाले अमावास्या को अगर हम भेस बदलकर जाएँ तो उन्हें पकड़ सकते हैं।''

मंत्री के कहे अनुसार राजा अपने दो अंगरक्षकों और मंत्री को साथ लेकर भेस बदलकर रात में निकले। जब वे रत्नपुर नामक उस गाँव के निकट पहुँचे तो उन्होंने पाँच लुटेरों को देखा। उन्होंने तुरंत अपने अंगरक्षकों की मदद से उन पर कड़ा प्रहार किया। उसी समय उन लुटरों ने अपने पास मौजूद बेहोशी का चूर्ण राजा पर फेंक दिया और भाग गये। इससे राजा तुरंत बेहोश हो गये।

राजा की हालत देखकर मंत्री डर गये और मदद के लिये आस-पास के

घरों के दरवाजे खटखटाये। लेकिन लुटेरों के डर से कोई भी उनकी मदद के लिये आगे नहीं आया। आवाज सुनकर एक बूढ़ी औरत बाहर आई। उसने मंत्री को केशव का पता बताया और उसे वहाँ जाने के लिये कहा।

मंत्री ने उसके कहे अनुसार केशव से मुलाकात की और उसे पूरी घटना बताई। केशव तुरंत अपने घर से कुछ जड़ी-बूटियाँ लेकर उनके साथ गया। उसके दिये हुये जड़ी-बूटी का रस पीने के बाद राजा की बेहोशी दूर हो गई। राजा ने अपना परिचय बताये बिना ही उसे धन्यवाद दिया और अपने मंत्री और अंगरक्षकों के साथ महल लौट गये।

दो महीने बीत गये। एक दिन शेखर, केशव के घर के सामने खड़ा होकर बहुत जोर से चिल्लाया, ''मैंने जो दस हजार रुपये का कर्ज दिया था उसे तुरंत वापस करो।'' यह सुनकर गाँव के लोग वहाँ जमा हो गये। घर से बाहर आये केशव ने कहा कि उसने उससे कोई कर्ज नहीं लिया है। इस बात पर उन दोनों के बीच बहस शुरू हो गयी।

तभी वहाँ आये सिपाही ने उन दोनों को राजा के सामने प्रस्तुत किया। राजा ने शेखर से पूछ-ताछ की। इस पर उसने कहा कि उसने दो महीने पहले केशव को कर्ज दिया था और अब वह उसे वापस करने से मना कर रहा है। इस पर केशव ने कहा कि उसने किसी से कर्ज नहीं लिया और शेखर झूठ बोल रहा है।

यह सुनकर राजा ने शेखर से पूछा, ''तुमने केशव को कर्ज कब दिया?'' उसने कहा, ''दो महीने पहले अमावास्या की रात को वह मुझसे पैसे लेकर गया था।'' यह सुनकर राजा ने तुरंत फैसला सुनाया, शेखर ही अपराधी है उसे जेल में डाल दो। यह केशव निर्दोष है। राजा का यह फैसला सुनकर बहुत से लोग आश्चर्यचकित हो गये। तब राजा ने बताया, ''दो महीने पहले अमावास्या की रात को केशव के इलाज से ही उनकी जान बची थी। इसलिये शेखर उस रात केशव से मिल ही नहीं सकता था। उस रात और अगली सुबह केशव मेरे साथ ही था। इसलिये केशव निर्दोष है और मैं खुद इसका गवाह हूँ।''

राजा का जवाब सुनकर केशव बहुत हैरान हुआ। यह जानकर कि उसने दो महीने पहले जिस भेस बदले व्यक्ति का इलाज किया था, वह राजा था। इससे वह बहुत खुश हुआ।

उसने सोचा कि उसके निस्वार्थ काम के लिये भगवान ने उसे उचित इनाम दिया है। उसके बाद राजा ने भी उसे कई उपहार देकर बिदा किया।

अक्तूबर-2025 महीने का क्विज-39 के समाधान

1) चक्रस्नान/अवभृथस्नान, 2) गरुड़ वाहन,
3) नागुल चविति, 4) माँ पार्वती,
5) नरकासुर, 6) श्रीकृष्ण,
7) महानंदि, 8) शमीवृक्ष,
9) ब्रह्मोत्सव, 10) श्रवणा नक्षत्र,
11) वैखानस आगम पद्धति,
12) नंदीश्वर लिंग, 13) ध्वजारोहण,
14) भगवान शिव, 15) द्वापर युग.

अक्तूबर-2025 महीने का क्विज-39 के समाधान के विजेता

चि. आराध्या कुमारी

चंदा नंबर : IM1606240897

चित्रकथा

भगवान से उपदेश प्राप्त तिरुमंगै आल्वार (परकाल स्वामी)

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवादक - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

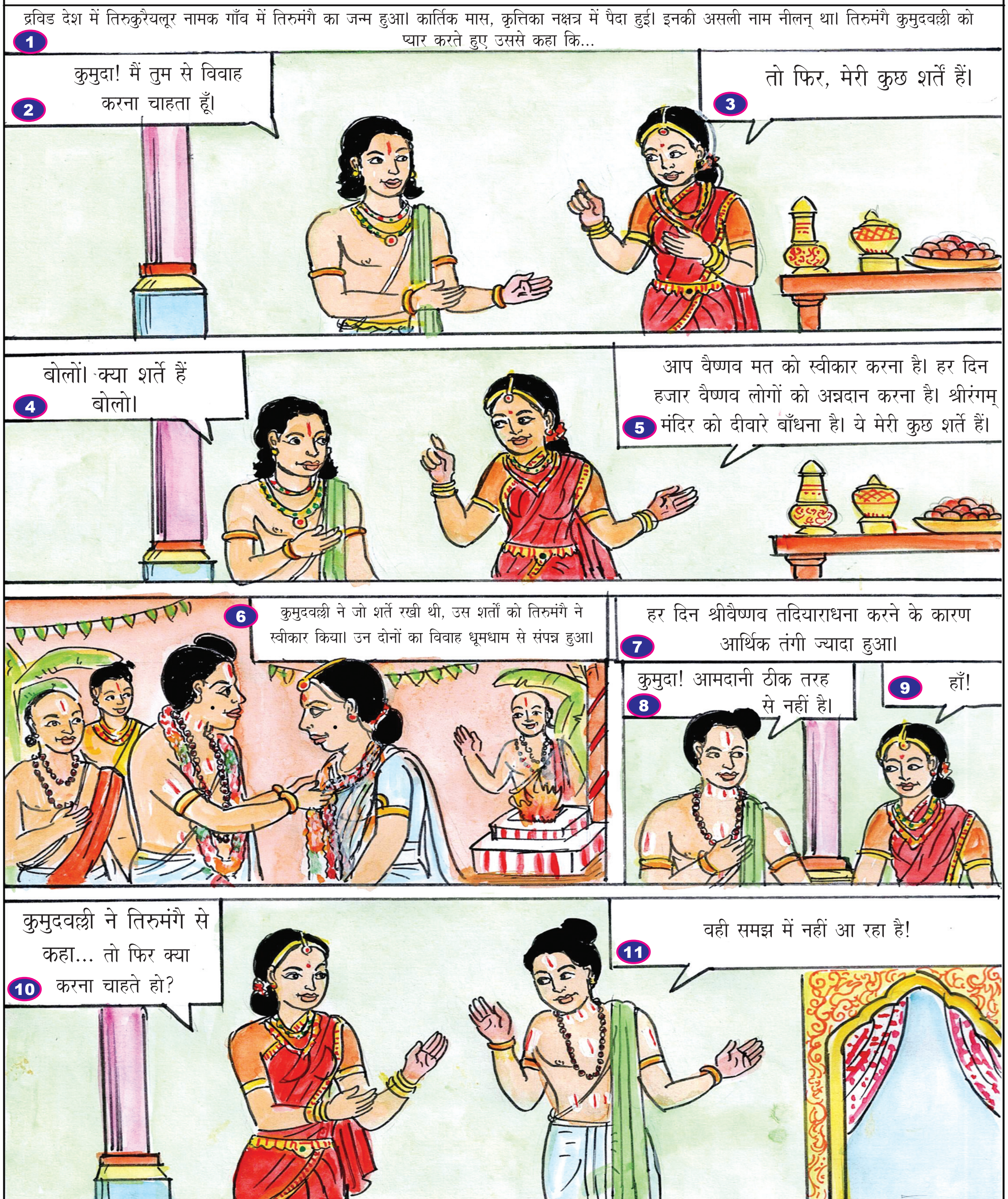

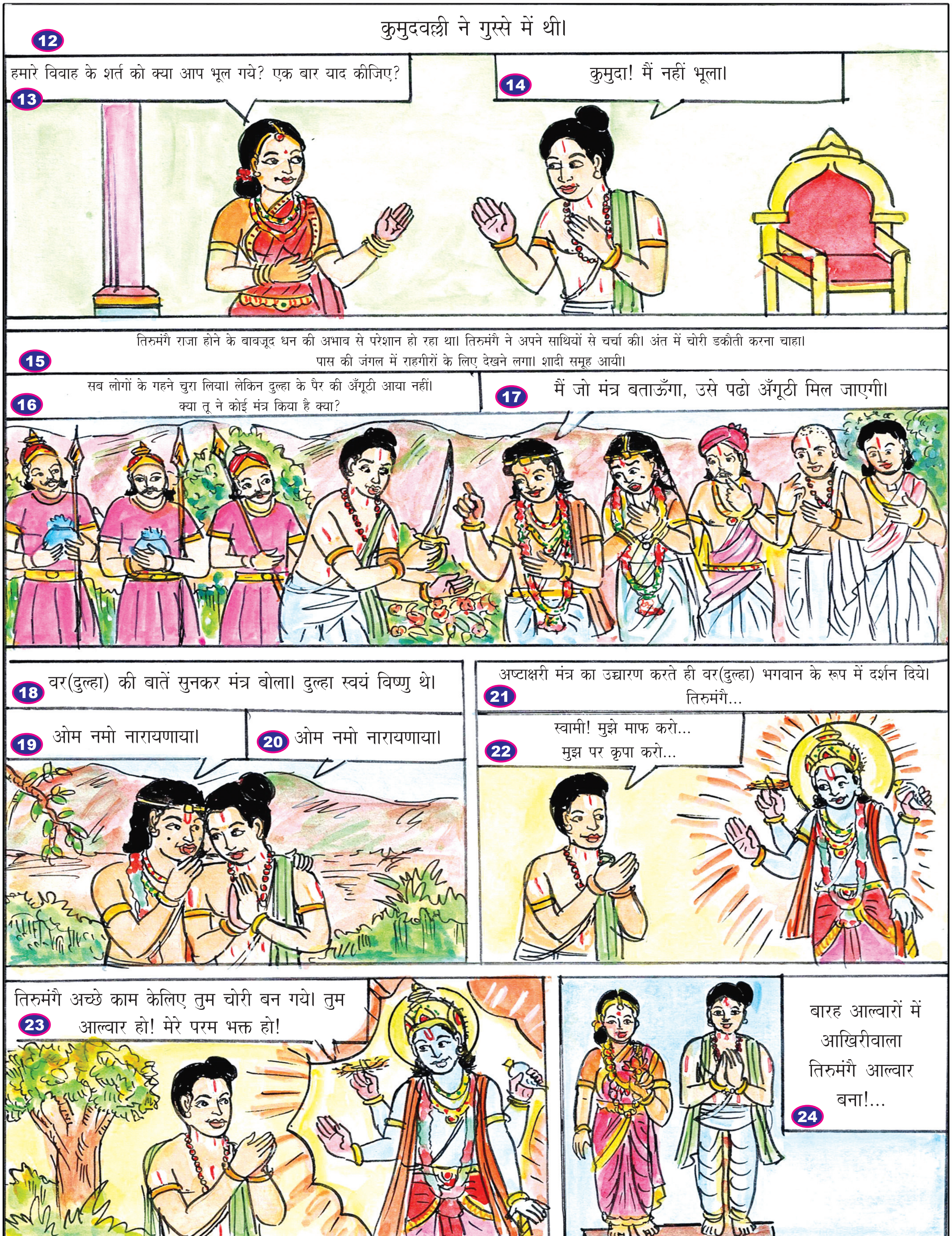

कुमुदवल्ली ने गुस्से में थी।
12
13 हमारे विवाह के शर्त को क्या आप भूल गये? एक बार याद कीजिए?
14 कुमुदा! मैं नहीं भूला।
15 तिरुमंगै राजा होने के बावजूद धन की अभाव से परेशान हो रहा था। तिरुमंगै ने अपने साथियों से चर्चा की। अंत में चोरी डकौती करना चाहा। पास की जंगल में राहगीरों के लिए देखने लगा। शादी समूह आयी।
16 सब लोगों के गहने चुरा लिया। लेकिन दुल्हा के पैर की अँगूठी आया नहीं। क्या तू ने कोई मंत्र किया है क्या?
17 मैं जो मंत्र बताऊँगा, उसे पढो अँगूठी मिल जाएगी।
18 वर(दुल्हा) की बातें सुनकर मंत्र बोला। दुल्हा स्वयं विष्णु थे।
19 ओम नमो नारायणाया।
20 ओम नमो नारायणाया।
21 अष्टाक्षरी मंत्र का उच्चारण करते ही वर(दुल्हा) भगवान के रूप में दर्शन दिये। तिरुमंगै...
22 स्वामी! मुझे माफ करो... मुझ पर कृपा करो...
23 तिरुमंगै अच्छे काम केलिए तुम चोरी बन गये। तुम आल्वार हो! मेरे परम भक्त हो!
बारह आल्वारों में आखिरीवाला तिरुमंगै आल्वार बना!...
24

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु............, चंदा नंबर.......................
पता...
....
मोबाइल नं...

क्विज-41

1) मार्गशिर शुद्ध एकादशी के दिन कौन सा पर्व मनाते हैं?
ज)..
2) वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में तिरुमल में किस वाहन सेवा माड़ावीथियों में जुलूस निकालते हैं?
ज)..
3) रत्नपुर नामक गाँव में गरीब किसान का नाम क्या है?
ज)..
4) तिरुमंगै आल्वार का असली नाम क्या है?
ज)..
5) तिरुमंगै आल्वार का पत्नी नाम क्या है?
ज)..
6) तिरुमल पुष्करिणी के अतिनिकट में विराजित भगवान कौन है?
ज)..
7) 'पंचम वेद' के नाम से प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम क्या है?
ज)..
8) 'एकादशी' कन्या किस भगवान के शरीर से उद्भव हुआ था?
ज)..
9) तिरुक्कडित्ताणम के मंदिर का तीर्थ नाम क्या है?
ज)..
10) तिरुप्पुलियूर (कुट्टनाडु) क्षेत्र का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
11) 'रामचरितमानस' का लेखक कौन है?
ज)..
12) कन्नड में व्यास तीर्थ (या) व्यासराज का गुरु का नाम क्या है?
ज)..
13) 'तिरुप्पावै' के लेखिका का नाम क्या है?
ज)..
14) आकाश राज के दामद कौन है?
ज)..
15) श्रीनिवास के माताजी का नाम क्या है?
ज)..

बिंदी को जोड़िए

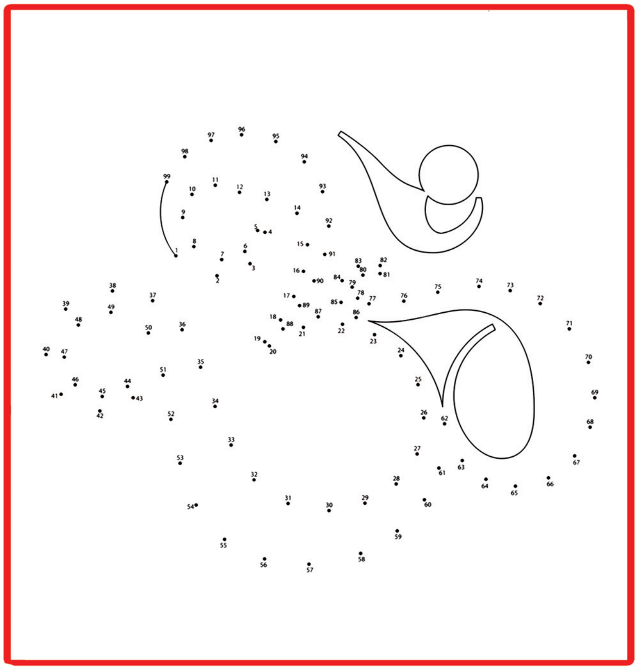

रंगों को भरिये क्या!

तालिका में सूचित विषय के अनुसार चित्रों को जोडिएँ

(a)

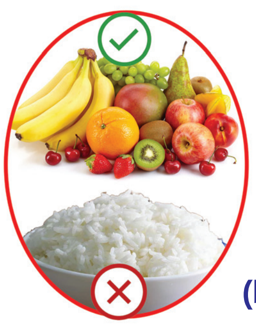
(b)

(c)

(d)

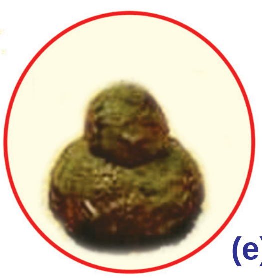
(e)

(f)

(g)

(h)

(i)

आधार :

1) धनुर्मास के समय में रंगोली में रखनेवाले चीजों का नाम बताइए...

a) रंगोली को डालना और रंगों से भरना

e) गाय के गोबर के गोले रंगोली में डालना

i) रंगोली में फूलों को डालना

2) वैकुंठ एकादशी के संदर्भ में कुछ करनेवाले काम...

b) भोजन वर्जित, फलों को खाना

d) श्री महाविष्णु को आराधन करना

f) मंदिर में वैकुंठ द्वार से प्रवेश करना

3) आंडाल माँ के संबंधित चित्र...

c) आंडाल माँ से कात्यायनी व्रत करना

g) आंडाल माँ ने अपने आपको श्रीकृष्ण समझना

h) आंडाल के पिताजी (पेरियाल्वार)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

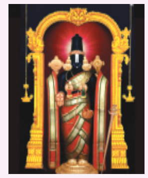

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि.19-12-2025 से
दि.12-01-2026 तक
तिरुमल श्री बालाजी के
मंदिर में अध्ययनोत्सव
आयोजित करते हैं।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-11-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.